भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 32 अंक : 4 | 24.7.2009 शुक्रवार (जुलाई – अगस्त) | शुल्क – प्रति अंक : 20.00, वार्षिक : 100.00

'भगवान, संत और सत्संगी से अटूट बंधन – यही शाश्वत् रक्षाबंधन'
एवं
गुरुहरि पप्पाजी का प्राकट्य पर्व...

5 अगस्त, श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन का परम पवित्र पर्व अपने नाम से ही अपनी गरिमा को दर्शाता है। लोकप्रथा के मुताबिक इस दिन निरपेक्ष अविभाज्य एकता की भावना की अभिव्यक्ति के रूप में बहन अपने भाई को राखी बांधती है और दोनों के बीच निर्मल एवं निर्व्याज प्रेम निर्विघ्न और अखंडित रहे, इस हेतु प्रभुचरणों में अंतर से प्रार्थना करती है। सो, **निर्मल प्रेम, पवित्रता और भक्ति के धागों से बंधा एक पवित्र रिश्ता – यानि 'रक्षाबंधन'!**

दूसरी ओर – नैतिक अधोगति की पराकाष्ठा पर पहुँचते आज के युग में सर्वथा 'रक्षा' केवल प्रभु प्रगटाई विभूति द्वारा ही संभव है। इसी हेतु स्वामिनारायण संप्रदाय के संत, 'महापूजा' में प्रार्थना करके, आशीर्वाद रूप बनी 'राखी' अपने आश्रितों को बांध कर निश्चिंतता, निर्भयता एवं हर प्रकार से 'रक्षा' का संकेत देते हैं। साथ ही, भगवान स्वामिनारायण ने **'भक्तों के बीच आपसी निरपेक्ष अटूट आत्मीयता और एकता की जो अपेक्षा रखी है** – वही अपेक्षा संतों ने भी रखी है। सो, स्वामिनारायण के आश्रितों के लिए तो **'भगवान, संत और सत्संगी से अटूट बंधन'** ही **'सच्चा रक्षाबंधन'** कहा जाए! यह बात जीव में दृढ़ होगी, तो –

✻ वचनामृत ग.प्र. 61 के मुताबिक –

'...भगवान के सिवा अन्य कोई इच्छा न रखता हो ऐसे निर्वासनिक एकांतिक भक्त के वश तो भगवान स्वयं हो जाते हैं... जैसे, बलिराजा की भक्ति देख कर भगवान उनके वश हो गए और उनकी भक्तिरुपी डोरी से ऐसे बंध गए कि आज तक वे बलिराजा के दरवाजे पर खड़े हैं, जिससे कि वे बलिराजा की दृष्टि से पलभर भी दूर नहीं रहते।

इसी प्रकार हम यदि सर्वस्व अर्पण करके भगवान के दास होकर रहेंगे... तो प्रभु स्वयं हमारे वश हो जाएंगे...'

* वचनामृत ग.प्र. 72 में भी हर प्रकार से रक्षा हेतु महाराज ने अभय वरदान दे दिया –

  'जिस भक्त को भगवान, संत और सत्संगी की खूब महिमा हो, उसका कर्म भले ही खूब कठिन हो और काल सिर पर हो, तब भी ये दोनों मिल कर उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते।'

* वचनामृत अमदावाद 11 में तो स्पष्ट कह दिया –

  'मेरा दृढ़ विश्वास रखोगे और आज्ञा में रहोगे, तो महाकष्ट से मैं उबार लूँगा...'

  और...

* गुरुवर्य योगीजी महाराज खूब सरल भाषा में दोहराते –

  'तू मारी जिकरमां, तो हुं तारी फिकरमां'। यानि – 'तू मेरे रटन में, तो मैं तेरी फ़िकर में!'

यदि हम कभी शंका करें या गफ़लत में भूल जाएं, तो प्रसंगों द्वारा प्रभु इस बात का पल-पल अनुभव भी करवाते हैं...

दिल्ली मंदिर से जुड़े **डूंडाहेड़ा के प.भ. देवदत्तजी** की भतीजी विवाह से पूर्व भगवान स्वामिनारायण की आश्रित थी; परंतु विवाह पश्चात् संजोगवश वह संपर्क जारी नहीं रख पाई। लेकिन, उसके साथ जो एक प्रसंग बना, वो हमें एहसास करवाता है कि भगवान स्वामिनारायण का जिसने आश्रय लिया, वह भले ही किसी भी कारण दूर हुआ हो, परंतु प्रभु उसे अपने आश्रय की अनुभूति अवश्य करवाते हैं। उस लड़की की जेठानी को लोक के मुताबिक किसी ऊपरी हवा से काफी परेशानी हुई थी। अतः घरवाले उसे किसी मंत्र-तंत्र करने वाले के पास ले गए। यह लड़की भी अपनी जेठानी के साथ गई थी। जब वह तांत्रिक अपनी विद्या का प्रयोग करने लगा, तो तुरंत बोला –

'यहाँ कोई भगवे कपड़े वाला साधु सामने आ जाता है, जिसके कारण मेरी विद्या काम नहीं कर रही।' तब उस लड़की को याद आया और उसने कहा कि मैंने पहले 'गुरु' धारण किए हुए थे, परंतु अब मैं उनके संपर्क में नहीं हूँ। यह सुन कर उस तांत्रिक ने कहा –

बस, इसी के कारण मेरी विद्या काम नहीं कर रही। आप यहाँ से बाहर जाओ, तो कुछ काम बने।

वह वहाँ से बाहर तो निकल गई, पर यह सुन कर वह अचंभे में रह गई और... अपने चाचा प.भ. देवदत्तजी से भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति दोबारा मांग कर ले गई!

हाल ही में **अमदावाद के प.भ. भाविनभाई** को 13 जून को अचानक चेस्ट में तकलीफ महसूस हुई। सो, उन्होंने बहुत ही अच्छे कार्डियोलॉजिस्ट की सलाह से 'टु-डी इको' एवं 'टी.एम.टी.' इत्यादि टेस्ट करवाए। टेस्ट्स की रिपोर्ट को देख कर डॉक्टर ने बताया कि उनका हार्ट केवल पैंतालिस प्रतिशत कार्य कर रहा है और एन्लार्ज भी हुआ है।

उनकी पत्नी सौ. चेतनाभाभी ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्राकट्य दिन निमित्त दिल्ली आई हुई थीं। सो, प.पू. दीदी की आज्ञा से वे रातोंरात फ्लाईट से अमदावाद चली गईं। दूसरे दिन प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार डॉक्टर की सलाह से प.भ. भाविनभाई की एन्ज्योग्राफी करवाई गई। पर... एन्ज्योग्राफी की रिपोर्ट बिलकुल नॉर्मल आई, जिसे देख कर डॉक्टर भी चकित हो गए। फिर भी दोबारा अन्य डॉक्टर से सलाह ली, तो उसने रिपोर्ट देख कर यही कहा – *'आपको किसने कहा कि हार्ट की पम्पींग पैंतालिस प्रतिशत है? आपका हार्ट अच्छी तरह पैंसठ प्रतिशत काम कर रहा है, जो नॉर्मल व्यक्ति का करता है और न ही आपका हार्ट एन्लार्ज हुआ है।'*

यह सुन कर प.भ. भाविनभाई श्री ठाकुरजी के दर्शन व धन्यवाद करने दूसरे ही दिन दिल्ली मंदिर आए और एक सप्ताह रुके।

जब वे वापिस जा रहे थे, तब प.पू. गुरुजी ने खूब कृपा करते हुए इस प्रसंग के मर्म को समझाने अमदावाद के मुक्तों को निम्न पत्र लिखा, जिसका एक-एक शब्द हमें सचेत करता है कि हम प्रगट की धाम, धामी और मुक्तों की निष्ठा दृढ़ कर लें और **बौद्धिक मूल्याकंनों को छोड़ कर मुक्तों को प्रभु** के **संबंध की दृष्टि से देखें –**

स्वामिश्रीजी *20.6.'09*

कर्णावती के प्यारे आत्मीय मुक्तों...

जय स्वामिनारायण!

प.भ. भाविनभाई यहाँ आराम करके स्वस्थ (रिलॅक्स) होकर अब वहाँ लौट रहे हैं। भाविन की हक़ीक़त से तो वाकई में आश्चर्य में ही हूँ। 'कैसा चमत्कार हुआ' – यूँ नहीं; क्योंकि जगत के लोगों की भाँति 'चमत्कारों' से तो मैं प्रभावित नहीं होता; लेकिन, आश्चर्य यह हुआ कि हमारे मन की कैसी जड़ता होगी कि इतने-इतने अनुभव होने के बावजूद भी और... ***'ए चितरामणना वाघोथी नहीं डरनार' – यानि 'ये चित्रित (पिक्टॉरियल) बाघों से हम नहीं डरने वाले'*** *जैसी भजन की पंक्तियाँ बार-बार खूब जोर-शोर से गाया करने के बावजूद, अब भी हम कितने विचलित हो जाते हैं? कैसे डर जाते हैं? और... बड़े पुरुषों का कहा सचोट नहीं माना जाता! भाविन की बात में भी –*

'जगत में करी गई भागदौड़ नए प्रारब्ध खड़े करेगी – बढ़ाएगी, जबकि भगवान के भक्तों-मुक्तों के लिए करी गई वही भागदौड़, हमारे प्रारब्ध को काटेगी'

प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी द्वारा कही गई यह बात यहाँ साकार हुई स्पष्ट दिखती है। ***मैं पक्का मानता हूँ कि –***

'परछाईं' की किडनी ट्रान्सप्लान्ट *के समय आप सब ने, अपना सारा ही संसारिक कारोबार एक तरफ रख कर, सतत दो-ढाई महीने जो भागदौड़ करी – परिश्रम किया – फिकर रख कर एक कुटुंबभाव से सेवा करी और उसमें कुछ भी प्यारा नहीं रख कर बहनों ने जब भी जो कुछ माँगा – करा वह तुरंत निकाल कर दे दिया... तो आज भगवान ने भी काल, कर्म और माया का न चलने देकर अपनी 'वीटो' से भाविन को मुसीबत में से उबार लिया!* ***प.भ. उदयभाई के यहाँ*** *दी हुई मूर्ति पर शायद ऐसा ही कुछ लिखा भी है –*

'तेरी करी हुई सेवा के फलस्वरूप तेरे पल्ले से प्रभु हमेशा बंधे हुए रहेंगे।'

भाविन के बारे में मैंने खूब सोचा और लगा कि यह कोई आकस्मिक लौकिक घटना है ही नहीं। लेकिन 'परछाईं' के लिए तुमने जो किया, उससे इतना बड़ा पुण्य उदय हो गया, जिससे यह प्रारब्ध टला है। किसी एकाध जगह मशीन में गड़बड़ हो या भूल या चूक हुई हो, लेकिन –

- *2D – इको,*
- *हार्ट की पम्पींग परसन्टेज,*
- *हार्ट एन्लार्जमेन्ट,*
- *T.M.T. रिपोर्ट*

ये चारों के चारों एकदम कैसे बदल जाएं?

तो, अब यह बात कभी भी भूलें नहीं और मन में पक्की गांठ ही बांध लें कि काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी जैसे **प्रगट स्वरूपों के संबंध वाले मुक्त सभी भले स्वभावयुक्त हों, लेकिन देव-देवियों और अवतार जैसे अरे! इनसे भी खूब बढ़ कर जबरदस्त हैं।** तभी तो महाराज को कहना पड़ा–

'जैसे अन्य सब इकट्ठे होते हैं, ऐसे इन्हें (इन मुक्तों को) नहीं समझना।' (भक्तचिंतामणी-प्र.77)

अतः, हो सके उतनी उनकी सेवा करना, लेकिन असेवा तो **कभी भी–कभी भी** नहीं करना। वो **असेवा क्या?** प.पू. योगीबापा कहते :

उनके दोष-स्वभाव-त्रुटियाँ देख कर, हमारे मन में उनकी अमहिमा भरें और अन्यों के पास बोलें–यह असेवा!

खूब सोचना, बड़े सत्त्वगुणी-महाज्ञानी-प्रखर विद्वान-अत्यंत सदाचारी-धर्मी-दानी-परोपकारी-सज्जन लगते हों, लेकिन पूर्व के संबंध वाले न हों, ऐसों को सत्संग में लाने का आपने खूब प्रयास किया होगा, लेकिन वे नहीं आए होंगे और...आ भी नहीं सकेंगे। गोबरगणेश या लल्लु जैसे या विचित्र या चालाकियाँ खेलते-करते या बदसलूकी करते व मतलबी लगते होंगे; लेकिन **पूर्व के होंगे,** वे ही अपनेपन से सत्संग में जुड़े रहे होंगे। वर्ना, दूसरों के तो बस का ही नहीं। इसीलिए तो महाराज ने गढडा मध्य के 59वें वचनामृत में लिखा–

'भगवान के संत की सेवा **बहुत बड़े पुण्य** वाले को मिलती है, लेकिन **थोड़े** पुण्य वाले को नहीं मिलती।'

क्या इन बातों को हमने लोया के वचनामृत 19 के मुताबिक ऐसी सच्ची मानी है?– कि बड़े संत जो बात करते हैं, वह वैसी ही है।

हमें तो ये केवल महिमावाचक शब्द ही लगते होंगे।

और... इसीलिए जब कोई मुक्त तनिक भी हमारे (खिलाफ) विरुद्ध बोलता-वर्तता लगता है, तब हमें इरिटेशन होता है और बड़बड़ाने लगते हैं; जिससे किया-करा हुआ सब कुछ धुल जाता है इतना ही नहीं, हम नए प्रारब्ध खड़े कर लेते हैं। सो ही मध्य के 59वें वचनामृत में महाराज को कहना पड़ा–

'ऐसी जिसकी वृत्ति है, उसे तो जैसा अपने सगे-संबंधी के प्रति लगाव है; वैसा भगवान के भक्त से कहा नहीं जाए। और... उसका कल्याण भी नहीं होता।'

फिर भी, हमारे प्रभु कैसे दयालु हैं कि भाविन जैसे प्रसंग ला-लाकर 'प्रगट' के संबंध वाले मुक्तों की महिमा हमें पुनः याद करवाते रहते हैं। तो अब, सावधान होकर **व्यावहारिक बुद्धि से मुक्तों की टीकाचर्चा** करना छोड़ कर जो प्राप्ति हुई है, उसका आनंद लें और नुकसान का धंधा ना करें–यही प्रार्थना।

प.पू. योगीबापा कहते–

यह बात समझ में आ जाए तो लाभ खूब है और न समझ आए तो नुकसान का भी पार नहीं है। सुज्ञेषु किं बहुना?

यही–

तुम्हारे ही गुरुजी के

खूब ही हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण!

सो ही, प्रगट स्वरूप को तत्त्व से यथार्थ पहचान कर उनकी निष्ठा दृढ़ रखवाने के लिए संतगण हमें रक्षाबंधन निमित्त 'राखी' बांधते हैं और... 'रक्षाबंधन' पर बहनें हमारे लिए हमेशा प्रार्थना करती हैं कि हमारी धाम, धामी और मुक्तों की प्रगट की निष्ठा दृढ़ हो। यही सच्चे अर्थ में हमें **'रक्षा कवच'** प्राप्त हुआ! इसी मर्म को पकड़े रखते हुए

आओ –

14 अगस्त, जन्माष्टमी को परम सत्यस्वरूप **भगवान श्री कृष्ण –**

जिन्होंने भगवद्‌गीता में ***'मेरे भक्त का नाश नहीं होगा'*** का अभय वरदान देकर आश्रितों की रक्षा का शाश्वत् जिम्मा लिया, ऐसे भक्तवत्सल भगवान का प्राकट्योत्सव भी मनाएं।

फिर... **1 सितंबर** को **ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज** – जो कि योगीजी महाराज का प्रकाश बन कर पल-पल वर्ते और जिए – उन**के प्राकट्य दिन पर प्रार्थनापुष्प अर्पण करें।**

जब से गुणातीत समाज अस्तित्व में आया, तब से प.पू. पप्पाजी ने असाधारण माहात्म्य का निरंतर प्रवाह ही बहाया। उन्होंने बोल कर नहीं, बल्कि अपने वर्तन से सभी के आध्यात्मिक विकास के लिए अत्यंत सरल व नवीन सूझ बताई!

'डरना नहीं, हटना नहीं, झुकना नहीं; लड़ंत लेनी सदा सर्वदा, अजय में या विजय में, इस लोक में और अंततः परलोक में...'

सत्संग के कई पुराने जोगियों ने प.पू. काकाजी की सिंहगर्जनारूपी वाणी में अनेक बार यह संजीवनी मंत्र सुना और प.पू. पप्पाजी के जीवन में भी हमने इस सूत्र का दर्शन किया है। पर, इसकी गहनता प.पू. पप्पाजी ने कृपा करके खुद एक बार निम्न प्रकार बताई –

'हाँ, यह सूत्र हम सीख गए। मैंने और दादुभाई ने इसके मुताबिक ही जीवन बना दिया और अभी भी वही जारी ही रहा है। तुम सब जब तक 'स्वरूप' न हो जाओ, तब तक लड़ंत लिया ही करना है। योगीजी महाराज कहते – 'हारना नहीं।' हार स्वीकार करेंगे, तो झंझट है न? प्रकृति और स्वभाव के साथ लड़ंत लिया ही करना और उससे परे हो ही जाना। यह काम हाथ में लिया सो लिया। अब पूरा किए बिना छोड़ने वाले नहीं, लो!'

इस बात में तो तनिक भी संदेह नहीं कि **ये गुणातीत स्वरूप संबंध वाले मुक्तों की पूर्णाहुति करवा कर ही चैन लेंगे।** मानो अपने आश्रित जीवों की चेतना का विकास करने की खातिरी दे दी!

और... उनकी ऐसी अदा केवल निजी मुक्तों को ही नहीं; बल्कि अल्प संबंध वालों को भी खूब प्रभावित कर देती। तभी प.पू. पप्पाजी के स्वधामगमन के पश्चात् की सभा में उनके अंतेवासी **डॉ. कोटियाला साहेब** ने कहा भी –

'पप्पाजी ने मुझे कभी कोई उपदेश नहीं दिया...'

तब भी प.पू. पप्पाजी उनके दिल में कैसे बैठ गए होंगे, यह उनके हृदय के उद्‌गारों से पता चलता था।

यूँ, सिर्फ भगवान की मूर्ति में ही हमें रखने वाले प.पू. पप्पाजी ने हमेशा अपना अस्तित्व ढाँका और... 'मैं कुछ नहीं' की गुणातीत अस्मिता में ही समग्र जीवन भक्तों की भक्ति करके पराभक्ति रूप बनाया। संबंध वालों की महिमा समझ कर व्यापक में प्रभु को ही निहारा और सभी को ऐसी आदत भी डलवाई। **उनकी निगाह में 'जगत' था ही नहीं, तो देखते भी कैसे?**

महिमापूर्ण दृष्टि, तीक्ष्ण चिकित्सक, बुद्धियुक्त प.पू. पप्पाजी ने भाँप लिया था कि प.पू. काकाजी गुरुहरि योगीजी महाराज के खूब लाड़ले व पसंदीदा पात्र हैं। सो, **देह के भाई के रिश्ते से अधिक उन्हें प.पू. काकाजी के प्रति गुरुभाव था।** तो दूसरी ओर – प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी,

प.पू. साहेब तथा प.पू. हरिभाई साहेब एवं प.पू. बा, प.पू. बेन के साथ भी असाधारण माहात्म्ययुक्त प्रभु का ही भाव रखा। उनके छोटे से छोटे सूचन को भी बड़ा मान कर जिए।

ऐसे गुणातीत पुरुषों की महिमा गाने, सुनने और लिखने के पीछे एक ही भावना है कि हम भी उस रास्ते पर चलें, क्योंकि वे मानवकक्षा की मर्यादा में रह कर हमारे लिए आदर्श रखने हेतु जीवन जीते हैं। उनकी ऐसी ही महिमा का दर्शन कराते हुए पहली सितंबर 1992 के एक आशीर्वचन में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** बोले भी थे–

"...हमारे लिए आदर्श स्थापित करने के लिए कैसी-कैसी भयंकर आँधियों में से ये सत्पुरुष गुजरे हुए हैं। लेकिन, उनकी मस्ती कभी भी गई नहीं; सिंह की भाँति आगे बढ़ते ही रहे। विपरीत माहौल का स्पर्श नहीं हुआ। सत्संग के भयंकर बवंडर उन्हें उदासीनता में ले जा नहीं सके। अपने ही लोग, अपना ही समाज जब उपेक्षा करे... तो भी उसमें काका-पप्पा टोटल याहोम हो गए!

'66 के (विमुख) प्रकरण में मैं सच में दिल से उदास हो गया था... छः महीने तक सुन्न मार गया था... कुछ दिखाई नहीं देता था। उस समय मैं पप्पाजी से बात करने गया; तब पप्पाजी इतना ही बोले–

'इसमें किसी का कसूर नहीं है। न तो ट्रस्टियों का न ही और किसी का; बापा ही कर रहे हैं।'

कैसी उनकी दृष्टि! एक योगीजी महाराज के सिवा कुछ भी नहीं! 'सारा समाज ब्रह्मनियंत्रित है'–यह पप्पाजी का सूत्र मुझे तब समझ में आया।

सो ही मैं कहता हूँ कि हमारे लिए इन्होंने बहुत सहन किया है। काका-पप्पा द्वारा बापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) ने एकांतिक धर्म की धुरा पृथ्वी पर अखंडित रखी है..."

सो, हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि हमें प.पू. पप्पाजी के दर्शन, सेवा, समागम का लाभ मिलता रहा। आइए, **ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी के प्राकट्य दिन** निमित्त न केवल उनकी स्मृति करें, बल्कि उनके द्वारा की गई निम्न कृपावर्षा को झेलें और धारें...

हम जो भी करें, वह खूब समझदारी से करें। आँख-कान बंद करके बस चलते रहें, ऐसा नहीं करना। शुरु से ही हमारा हेतु और ध्येय भी ऐसा ही है कि ***भले ही थोड़ा करना, लेकिन सोच-समझ कर दिमाग़ में बैठे, फिर करना।***

मेरा पहला वाक्य है: ***लाखों टन ज्ञान की अपेक्षा थोड़ा-सा भी वर्तन अधिक है।*** *यानि कि–एक टन ज्ञान की अपेक्षा सिर्फ दस ग्राम वर्तन भी होगा न, वह बहुत काम करेगा।*

कई (धर्मी) सप्ताह बिठाते हैं, उसका हेतु तो बहुत अच्छा होता है। सप्ताह में बैठते हैं, तो व्रत भी करते हैं। अन्य सभी झंझट छोड़ कर (सारा दिन) कथा में मन पिरो रखते हैं और भोजन (भी) शाम को (ही) करते हैं। लेकिन फिर क्या होता है कि (भावना की) आत्मा को उड़ जाने में समय नहीं लगता और देह को (भावना के स्थूल रूप को) ही पूजते रहते हैं। सो, उसका परिणाम नहीं आता। ***समझदारी से जो करेंगे, उसका ही परिणाम आता है।***

महाराज को सिर्फ 'भगवान' कह देने से उसका कुछ भी परिणाम नहीं मिलेगा। (सोचना कि) बोलता हूँ, पर वर्तते समय भगवान मानता हूँ क्या? कोई कहेगा भी कि 'मैं भगवान मानता हूँ–बस।' लेकिन (वह) सोचे

कि ***'भगवान' यानि क्या ? और... भगवान मानने के बाद मुझे क्या करना चाहिए ? 'भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों को वे जानते हैं'*** *– क्या ऐसा मैं मानता हूँ ?*

फिर, मानो आज तुम्हें व्यापार-धंधा करना हो और स्वामी बोलें कि 'नहीं करना'। तब भीतर में ऐसा हो कि–

'स्वामी ! आप इसमें नहीं समझोगे, यह करे बिना गुज़ारा नहीं है... मुझे इस लड़के की शादी करनी है, लड़की का विवाह करना है... तब – स्वामी ! रहने दो, आपको पता नहीं होता, लोक में रिवाज ऐसे हैं – वैसे हैं वगैरह तुरंत ही कह देंगे।'

1953-54 की बात है। गोंडल में उत्सव था और बापा के पास सभा लगी थी। पुराने-पुराने हरिभक्त बैठे थे। उनमें से एक ने गुरुहरि योगीजी महाराज को कहा–

'स्वामी ! सच में आपको बता दूँ ? मुझे शास्त्रीजी महाराज ने कहा था कि यह जोगी साक्षात् गुणातीत स्वरूप है। अक्षरधाम में इनके जैसा कोई साधु नहीं है। आप साक्षात् गुणातीत हो या नहीं ? यह आप सच-सच बता दो।'

बापा बोले – 'देखो, ऐसा है कि हमें यदि अपने गुरु में विश्वास हो, तो बात सच्ची है।'

फिर दूसरे दिन एक हरिभक्त ने दादुभाई को पूछा कि 'यह किताब छपवाई है, वह यहाँ जो-जो स्वयंसेवक आए हैं, उन्हें भेंट में दें क्या ?'

दादुभाई उत्सव के हेड (सूत्रधार) थे। उन्होंने बापा को पूछा, तो बापा बोले – 'दो न !'

गुरु कृष्णजी अदा की प्रशस्ति की एक-एक रुपये की पुस्तक थी।

फिर तो सभा में किताब बाँटी गई; तब ***'साक्षात् गुणातीत स्वरूप मानने वाले'*** *भाई का फ्यूज़ उड़ गया ! 'यह किताब क्यों बाँटी ?' उन्हें सारी बात की जानकारी दी, फिर भी बोले – 'ऐसी किताब बाँटी जाती है क्या ? ऐसा ज्ञान किसने फैलाया ? यह यहाँ बाँटने देनी चाहिए क्या ?' – यूँ झाड़ दिया !*

देखो, क्या वो (बापा को) बड़ा व्यक्ति भी मानता है ? क्या जज जितना भी मानता है ? कोर्ट में जज का कितना रॉब होता है ? यूँ बोलोगे, तो सीधे जेल में डाल देंगे।

सो, ***सबसे बड़ा दोष यही है। मानते नहीं हैं और बोलते हैं। वर्तना नहीं होता, वही कहते रहते हैं।*** *यह दोष टाल देना है। जैसा बोलते हैं, वैसा हमें जरुर वर्तना ही है। हम जो बोलें, उस पर (स्वयं) सोचें और सत्य लगे वैसे वर्तने लग पड़ें। नहीं माना जाए तो कहना – 'मेरे दिमाग़ में बैठता नहीं है।'*

हमने ऐसा रखा है, तो परिणाम दिखाई देने लगा। इस हेतु यह शिविर है। इसमें ग्राह्यदृष्टि रख कर बैठें और एकाध वाक्य पकड़ लें।

मैं ऐसा करता था। दादर मंदिर जाता, वहाँ कथा सुन कर मेरे अंग से संबंधित हो, वह ले लेता। इधर-उधर ताकाझांकी नहीं करता था ! कौन आया और कौन गया – उस ओर नज़र ही नहीं जाने देता था। मेरे अंग से संबंधित जो होता, वह एक छोटे से काग़ज पर लिख लेता। फिर घर आकर याद से पूरा लिख लेता। इससे मेरा ख़ुद का तो पक्का हो गया न !

– प.पू. पप्पाजी महाराज

('गुणातीत ज्योत' पत्रिका के सौजन्य से)

✡✡✡

'योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

विज्ञप्ति

2012 की मंगलमयी साल यानि – **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** मनाने का वर्ष! 15 दिसंबर 1953 को 17 वर्ष की युवा आयु में, **प.पू. गुरुजी** का गुरुहरि योगीजी महाराज व प.पू. काकाजी से प्रथम मिलन हुआ... सत्संग की गोद में अर्थात् **ताड़देव-मुंबई** से सर्जित **'योगी परिवार'** में उनका पालन-पोषण हुआ। तब से उनका जीवन मानो 'योगी परिवार' को समर्पित हो गया और वे अब, जीवन के **75 वर्ष** पूर्ण करेंगे! धन्य भाग्य! धन्य घड़ी! प्रभु को सांगोपांग अखंड धारी हुई विभूति प.पू. काकाजी द्वारा अपनाए और आग्रहपूर्वक प्रवर्तित **'एकता ही एकांतिकभाव'** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का एक अनमोल मौका हमारे जीवन में आ रहा है। हर मुक्त के अंतर की एक ही आवाज है –

हे भजनिक सुहृद् गुणातीत, गुरुजी जियो सौ-सौ शरद्...

चाहे छोटा हो या बड़ा, नया हो या पुराना – सभी को यह एहसास व अनुभव तो है ही कि प.पू. गुरुजी ने किसी बात की - *'अरे! लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे-क्या सोचेंगे'*, यूँ लोक की परवाह किए बिना संपर्क में आए हर एक को प्रगट प्रभु की पहचान कराने का-संबंध देने का- कठोर परिश्रम अविरत किया है। तभी तो, **प.पू. पप्पाजी** के मुँह से भी आशीर्वाद फिसले – ***'मुकुंदजीवन बहु शूरवीर'!***

गुणातीत परिवार के संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों – सभी के साथ उनकी कक्षा पर आकर वे एक स्वजन बन कर रसबस हुए हैं और हम सभी को इसी कौटुंबिक भावना से आपस में जोड़ने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। आधी रात को भी सभी के सुख-दुःख में-शुभ अवसर या मुश्किल में साथ खड़े रह कर हिम्मत दी है। आध्यात्मिक व व्यावहारिक समस्याओं का समाधान तो दिया ही है, साथ ही कइयों के मन के बवंडरों को अपने मोहक दर्शन, प्रसाद, कथावार्ता और भजन द्वारा शांत किया है। और तो और, उनके जीवन की दिशा ही बदल दी! स्वयं भजन कर-करके एवं हम से भी करवा कर कई समस्याओं का हल निकालते हुए तो हम सब ने उन्हें देखा भी है। तभी तो **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** दोहराते रहते हैं– ***'गुरुजी खूब भजनिक हैं।'***

और... अब तो प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी की जीवंत स्मृतिरूप **'गुणातीत समाज'** को चिरंजीव करने, उसकी अखंडता एवं एकता बनाए रखने के लिए ही इसी तरीके से लगे हुए वे दिखाई पड़ते हैं! यूँ, प.पू. गुरुजी ने जो किया है या कर रहे हैं, उसका ऋण तो हम कभी नहीं चुका पाएँगे। पर अपनी 'गुरुभक्ति' अदा करने का मौका हम न चूकें...

दूसरी ओर – हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी अपने आपको प.पू. काकाजी का अदना सेवक ही समझते हैं। सो, पुराने जोगी प.पू. काकाजी से भी जुड़ी हुई स्मृतियाँ-प्रसंग लिख कर यदि भेजेंगे, तो हमें और अधिक आनंद होगा।

अतः **सभी मुक्तों से प्रार्थना है कि प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त अपने अनुभव जो आपको भीतर तक छू गए हों, उन्हें हिन्दी/अंग्रेजी में लिख कर पृष्ठ 9 पर* दिए पते पर भेजते रहें,** जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी का सम्यक् परिचय देने की भक्ति हम से अदा हो सके। आप सभी के सहयोग से ही यह संभव हो पाएगा... इसी प्रार्थना के साथ –

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

વિજ્ઞપ્તિ

'યોગી પરિવારનું અદ્‌ભુત સર્જન... પરમ પૂજ્ય કાકાશ્રીની સૌરભ!'

2012 નું મંગળકારી વર્ષ એટલે – **'યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ'**ની ઊજવણીનું વર્ષ; જ્યારે સત્સંગમાં અર્થાત્ **તાડદેવ – મુંબઈના 'યોગી પરિવાર'**માં ઊછરેલા, પ.પૂ. ગુરુજી જીવનના ૭૫ વર્ષ પૂરા કરશે! ધન્ય ભાગ્ય! ધન્ય ઘડી! પ્રભુને સાંગોપાંગ અખંડ રાખેલી વિભૂતિ પ.પૂ. કાકાશ્રીએ અપનાવેલ અને આગ્રહપૂર્વક પ્રવર્તાવેલ **'એકતા એ જ એકાંતિકપણું'**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો એક લ્હાવો અમ સહુના જીવનમાં આવી રહ્યો છે. દરેક મુક્તના અંતરે એક જ અવાજ છે –

હે ભજનિક સુહૃદ્ ગુણાતીત, ગુરૂજી જીવો સો-સો શરદ્.

નાનાં હોય કે મોટાં, નવાં હોય કે જૂનાં – દરેકને એ અનુભવ તો છે જ કે પ.પૂ. ગુરૂજીએ કોઈ વાતની – અરે! પોતાની ય કે લોક મારે માટે શું ધારશે – શું કહેશે એની પરવાહ કર્યા વગર, સંપર્કમાં આવનાર દરેકને પ્રગટ પ્રભુની ઓળખાણ કરાવવા – એમનો સંબંધ આપવા ખૂબ જ ભીડો વેઠ્યો છે. એટલે જ તો **પ.પૂ. પપ્પાજી**ના મુખથી આશીર્વાદ સરી પડયા – ***'મુકુંદજીવન બહુ શૂરવીર!'***

ગુણાતીત પરિવારના સંતો, યુવકો, બ્હેનો અને ગૃહસ્થો – બધાં સાથે એમની કક્ષાએ આવી સહુના સ્વજન થઈ એઓ રસબસ થયા છે અને આપણને સૌને ય આ જ કુટુંબભાવથી અરસપરસ જોડવા સતત્ પ્રયત્નશીલ છે. અડધી રાત્રે પણ બધાંના સુખ-દુ:ખમાં – શુભ અવસરે કે મુશ્કેલીમાં સાથે ઊભા રહી હિંમત આપી છે. આધ્યાત્મિક અને વ્યાવહારિક સમસ્યાઓનો ઉકેલ તો આપ્યો જ છે, સાથોસાથ ઘણાંના મનના વંટોળને પોતાના મોહક દર્શન, પ્રસાદ, કથાવાર્તા અને ભજનથી શાંત કર્યા છે... એટલું જ નહીં, એમના જીવનની દિશા જ બદલી નાખી! પોતે ભજન કરી-કરીને અને આપણી પાસે ય કરાવીને ઘણી મુશ્કેલીઓનું સમાધાન કાઢતા આપણે સહુએ એમને જોયા પણ છે. એટલે જ **પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ હરિપ્રસાદસ્વામિજી** ઘણી વાર કહેતા હોય છે – ***'ગુરૂજી ખૂબ ભજનિક છે.'***

અને... હવે તો પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. પપ્પાજીની જીવંત સ્મૃતિરૂપ **'ગુણાતીત સમાજ'**ને ચિરંજીવ કરવા, એની અખંડતા અને એકતા જાળવી રખાવવા એ રીતે જ એઓ મંડયા દેખાય છે. આમ, પ.પૂ. ગુરૂજીએ જે કર્યું છે – કરી રહ્યા છે, એનું ઋણ તો આપણે કદીય ચુકવી શકીશું નહીં. પણ, આપણે 'ગુરૂભક્તિ' અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...

આપણે સહુ જાણીએ છીએ કે પ.પૂ. ગુરૂજી પોતાને પ.પૂ. કાકાશ્રીના એક અદના સેવકમાત્ર માને છે. તો, જૂના જોગીઓ જો પ.પૂ. કાકાશ્રી સાથેની પણ સ્મૃતિઓ – પ્રસંગો લખીને મોકલશો, એનો અમને ઘણો આનંદ થશે.

તો, **સહુ મુક્તોને પ્રાર્થના છે કે પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે આવા અનુભવ-પ્રસંગો કે જે અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય, એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો**, જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. ગુરૂજીનો સમ્યક્ પરિચય આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ. આપ સહુના સહકારથી આ શક્ય થઈ શકશે... એ જ પ્રાર્થના સાથે –

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

आशीर्वाद...

૧૪-૫-૨૦૦૯
ગુરુવાર

To આત્મીય સંતો-ભક્તોની સેવામાં

Swami Shreeji
H. H. HARIPRASAD SWAMIJI
YOGI DIVINE SOCIETY Haridham, SOKHADA - 391 745, Dist: Vadodara, Guj., INDIA

આત્મીય સંતો પ્રભાકરભાઈ અને ભક્તોની સેવામાં

"યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ" – રવિવારમાં ઉજવવા સંકલ્પ આપ સૌએ કર્યો તેથી ખૂબ આનંદ થયો છે આપના પત્ર વાંચીને ખૂબ આનંદ થયો.. આપણે સૌએ તો ગુરુજીના રાજીપામાં – ગુરુજીના ઉદ્દેશ મુજબ અને ગુરુજીની રીતે જીવન જીવવાનો દઢ સંકલ્પ કરવાનો છે એ ભક્તિ

માલીક તેરી રઝા રહે – કેવળ તુમ હી તૂ રહે
ના મૈં રહું – ના મેરી આરઝૂ રહે

વર્ષો પહેલાં પૂ. કાકાશ્રીએ ત્રિગુણ પુસ્તકની શરૂઆતમાં આ સૂત્રને જુના મંદિરે ખૂબ સમજાવ્યું હતું અને ગુરુજીએ કાકાશ્રીની રીતે રીત પ્રમાણે ભક્તોની સાથે આત્મીય થઈ.. એમની કૃપાએ વધી – એમના રાજીપા પ્રમાણે જે સુંદર ઉત્સવ ઉજવ્યો તે ખરેખર અદ્ભુત છે.. ખરેખર ગુરુજીએ કાકાશ્રીને રાજી કરી દીધા.. એવા રાજી ગુરુજીને કરવા માટે સુંદર તક – સુંદર મહોત્સવ આવી રહ્યો છે તો સૌ એમના સંકલ્પ–ક્રિયા અને ભાવશુદ્ધ સેવન કરી લેશોજી – ગુરુજી કિંચિત્ અંશમાત્ર નાખુશ થઈ કદાપિ ના થાય – એ રીતે જાગૃતતા રાખવાની છે બધું ભજન અને સેવામાં આપ સૌ કૂદકો લગાવજો વિશેષ કહેવું.. જેથી ગુરુજી રાજી થઈ જાય – રાજી રહેશોજી

સંતો સાધુ હરિપ્રસાદના આત્મના જય સ્વામિનારાયણ.

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के आशीर्वाद का हिन्दी अनुवाद

14.5.2009
बृहस्पतिवार

आत्मीय सेवकों की सेवा में

आत्मीय सेवक प्रभाकरभाई और भुल्कों की सेवा में
2012 में **'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव'** मनाने का संकल्प आप सभी ने किया है;
जान कर खूब आनंद हुआ है। आपका पत्र पढ़ कर खूब आनंद हुआ...
हम सभी को तो गुरुजी की मर्जी में,
केवल गुरुजी के बल से और गुरुजी की रीति से,
जीवन जीने का दृढ़ संकल्प करना ही है।
हे भुल्कों –

मालिक तेरी रज़ा रहे, केवल तू ही तू रहे, न मैं रहूँ... न मेरी आरज़ू रहे।

वर्षों पहले पू. काकाजी ने विमुख प्रकरण की शुरुआत में
यह सूत्र पुराने (सोखड़ा) मंदिर में खूब समझाया था
और
काकाजी की शैली अपनाते हुए गुरुजी भक्तों के साथ ओत-प्रोत होकर...
उनकी कक्षा पर जाकर, उनकी मर्जी के मुताबिक जो सुंदर उठाव ले रहे हैं,
वह सच में अद्भुत है...
सच में गुरुजी ने काकाजी को 'हाश' कर दी...
ऐसी ही 'हाश' गुरुजी को देने के लिए सुंदर मौका-सुंदर महोत्सव आ रहा है।
तो सभी उनके संकल्प, क्रिया और भाव से ही सेवन कर लेना।
गुरुजी हमसे तनिक भी मोहताज़ न हों, इतनी जाग्रतता रखनी है।
बाकी भजन और सेवा में आप सभी डूबे हुए हो ही; उससे अधिक डूब जाना...
जिससे गुरुजी को 'हाश' हो जाए।
राजी रहना –

*सेवक **साधु हरिप्रसाद** के अंतर के जय श्री स्वामिनारायण!*

आशीर्वाद...

|| SWAMI SHREEJI ||

Ph : (0265) 2840215

Shree Akshar Purshottam Satsang Kendra

Shree Akshar Purshottam
Swaminarayan Temple

(P.T. Reg. No. - F - 393 Baroda)

At & Po. : SANKARDA - 391 350,
Dist : Baroda, Gujrat (India).

Date : ૧૭।૭।૦૯

પ.પૂ. ગુરુહરિ કાકાશ્રી તેમજ પ.પૂ. દિવ્ય પપ્પાજીના વારસદાર એવા પ.પૂ. ગુરુજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યદિન – "યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ" - ૨૦૧૨ તરીકે ઉજવવાનું આપ સૌ મુક્તોએ નક્કી કર્યું છે તે જાણી ખૂબજ આનંદ તેમજ આત્મીયતા પૂર્વક સાક્ષાત દિવ્ય સ્વરૂપોને અંતરથી પ્રાર્થના થઈ ગઈ કે, હે પ્રભુ! આપનો અંતરનો અભિપ્રાય જે પ.પૂ. કાકાશ્રી જાણતા હતા તેને પ.પૂ. ગુરુજીએ રગેરગમાં પચાવ્યો છે અને તેને પોતાના સંબંધમાં આવનાર સૌ કોઈમાં પ્રસરાવવા તનતોડ મહેનત અને પરિશ્રમ કરી રહ્યા છે. એમના આ પુરુષાર્થમાં આપણે સૌ ભેગા મળી સુહૃદયભાવના નાતે સાથ સહકાર આપીએ અને સૌ યોગીપરિવારના એકાન્તિક મુક્તો ભેગા મળી [illegible] બ્રહ્માનંદ, બ્રહ્મકિલ્લોલ કરી પ.પૂ. કાકાશ્રી તથા પ.પૂ. પપ્પાજીના સંકલ્પને સાકાર કરવા અને તેમનું યત્કિંચિત ઋણ અદા કરવા લઈ મંડીએ એજ અંતરની પ્રાર્થના સહ જયસ્વામિનારાયણ.

લિ. સદા સેવક સાધુ અક્ષરવિહારીદાસના
ઘણાજ હેતથી જયસ્વામિનારાયણ.

[हिन्दी अनुवाद के लिए पढ़िए पृष्ठ – 39 पर]

आशीर्वाद...

સ્વામીશ્રીજી

૧૨ મે, ૨૦૦૯
કાકાશ્રી જયંતિ દિન

પૂ. શ્રી મુકુંદજીવનસ્વામીજી(પૂ. ગુરુજી)ની પવિત્ર સેવામાં---

આપની ૭૫મા પ્રાગટ્ય જયંતિ નજીક આવી રહી છે. આપની ભીડો અને દાખડો આપની ઉંમરને વટાવીને આપને નવયુવક સમાન થનગનાવે છે. તેથી મહારાજ, ગુણાતીતાનંદ સ્વામી, ભગતજી મહારાજ, જાગા સ્વામી, કૃષ્ણજી અદા, શાસ્ત્રીજી મહારાજ, યોગીજી મહારાજ, કાકાશ્રી મહારાજ, પપ્પાજી મહારાજ, હરિપ્રસાદ સ્વામીજી, અક્ષરવિહારી સ્વામીજી, નિર્મળસ્વામીજી, જશભાઈ સાહેબ, પ્રમુખ સ્વામીજી, મહંત સ્વામીજી, હરિભાઈ સાહેબ અને સર્વ ગુણાતીત સ્વરૂપોના ચરણોમાં પ્રાર્થના—કે આપ ૧૦૦ વર્ષની ઉંમર સુધી નિરામય આયુષ્ય રાખો---

આપની પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ અને પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ કાકાશ્રી મહારાજની અનોખી ભક્તિ અને સમર્પણનું દર્શન જ્યારે પણ થાય છે ત્યારે અમારૂ મસ્તક નમી જાય છે. ધન્ય છે આપના ગુરુમુખી ભાવને... આપે આ ગુણાતીત સ્વરૂપોના વચને ઉત્તર ભારતમાં, દિલ્હીમાં ધુણી ધખાવી અને આજે અનેક ચૈતન્યોને સાચી સૂઝ આપી અને ગુણાતીત સ્વરૂપોનો મહીમા ગાઈને અક્ષરધામનું સુખ આપો છો.

દિલ્હીના હરિભક્તોનો સમાજ વધતો જાય અને સરસ ગુણાતીત જ્ઞાન આપના સંબંધે પાકુ કરતા જાય એવી મહારાજ અને સર્વ ગુણાતીત સ્વરૂપોના ચરણે પ્રાર્થના છે.-

શિકાગો મંડળ વતી આપના સેવક દિનકર, બાપુ અને સહુના હેતપૂર્વક જય સ્વામિનારાયણ.

[हिन्दी अनुवाद]

स्वामिश्रीजी

12 मई 2009
'काकाजी' जयंती दिन

पूज्य श्री मुकुंदजीवनस्वामिजी (पू. गुरुजी) की पवित्र सेवा में...

आपकी 75वीं प्राकट्य जयंती नज़दीक आ रही है। आपकी कसनी और परिश्रम, आपकी उम्र की सीमा को लांघ कर, आपको एक नवयुवक की भाँति थिरकाते हैं। सो, महाराज, गुणातीतानंदस्वामी, भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, निर्मळस्वामिजी, जशभाई साहेब, प्रमुखस्वामिजी, महंतस्वामिजी, हरिभाई साहेब एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि आप 100 वर्ष की उम्र तक निरामय आयुष्य रखें।

प्रगट ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज और प्रगट ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रति आपकी अनोखी भक्ति और समर्पण का जब भी दर्शन होता है, तब हमारा मस्तक झुक जाता है। धन्य है आपके गुरुमुखी भाव को... इन गुणातीत स्वरूपों के वचन से आप उत्तर भारत में, दिल्ली में धुनी धका कर, आज अनेक चैतन्यों को सूझ देकर एवं गुणातीत स्वरूपों की महिमा गाकर, अक्षरधाम का सुख दे रहे हो।

दिल्ली के हरिभक्तों का समाज बढ़ता जाए और आपके संबंध से बढ़िया गुणातीत ज्ञान पक्का करता रहे, ऐसी महाराज और सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है...

*शिकागो मंडल की ओर से आपके सेवक **दिनकर, बापु** और सभी के हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण!*

सौरभ - १

।। સ્વામિશ્રીજી।।

ગુરુહરિ પ.પૂ. કાકાશ્રીનું પસંદગીનું પાત્ર એટલે પ.પૂ. ગુરુજી. શિલ્પકાર જે રીતે પોતાના શિલ્પની સંભાળ લે, માવજત કરે અને તેને પોતાના અંતરમાં કંડારેલ કૃતિને આબેહૂબ કરે તેવું જ કંઈક કાકાશ્રી અને ગુરુજીના સંબંધોને નિહાળતા દર્શાય. આજે ખરેખર ગુરુહરિ કાકાશ્રી, ગુરુજીરૂપ પોતાની કૃતિને નિહાળીને ફૂલ્યા નહીં સમાતા હોય.

આજે ગુરુજીએ દિલ્હી-પંજાબમાં જે કુટુંબભાવનાનું પૂર વહેવડાવ્યું છે તે જોઈને...

તેઓએ કાકાશ્રી પરત્વે દર્શાવેલ ગુરુભક્તિને નિહાળીને...

સર્વ ગુણાતીત સ્વરૂપો સાથેના તેમના સહજ, સ્વાભાવિક, ખુલ્લા દિલના સંબંધનું પ્રસંગોપાત દર્શન કરીને...

કાકાશ્રીના સાચા સૈનિક બની જીવવા માટેની સુંદર સૂઝ સેવકોને અર્પીને આદર્શ સેવકોના જીવનને નિહાળીને...

કાકાશ્રીના જીવનને નિહાળવાની અદ્‌ભુત દૃષ્ટિનું દર્શન કરાવનાર ગુરુજીને...

તેમના યોગી પરિવાર અમૃત આનંદ મહોત્સવે કોટિ કોટિ પ્રણામ સહજ જ થઈ જાય છે.

લગભગ ઈ.સ. ૧૯૯૭માં કાકાશ્રી અને ગુરુજીના પ્રાસાદિક સ્થાનોનું દર્શન કરવા દિલ્હી મંડળ મુંબઈ આવ્યું હતું. કાકાશ્રીની 'Agri Orient' ઓફિસનું દર્શન કરવા જવા અમો સહુ ગુરુજી સાથે ફોર્ટ પહોંચ્યા. ગુરુજીએ બિલ્ડિંગ શોધી કાઢ્યું. પરંતુ નજીક-નજીકમાં બે-ત્રણ એક સરખા બિલ્ડિંગ હોવાથી કયું બિલ્ડિંગ તે નક્કી નહોતું કરી શકાતું. અમો એક બિલ્ડિંગના ત્રણ માળ ગુરુજી સાથે ચઢ્યા. પરંતુ તે જ કાકાશ્રીની ઓફિસ છે તે નક્કી ન થઈ શક્યું. આખરે એકના એક બિલ્ડિંગમાં ત્રણ-ચાર વખત ત્રણ-ચાર માળ ચઢ્યા ને બધી નિશાનીઓ બતાવીને કહ્યું કે 'આ જ કાકાશ્રીની ઓફિસ હતી.' આમ ગુરુના પ્રાસાદિક સ્થાનના માહાત્મ્યનું સ્પષ્ટ દર્શન પોતાના દેહને ગણ્યા વગર કરાવ્યું. તે પ્રસંગ આજે પણ મારા હૃદયમાં કોતરાઈ ગયો છે. ધન્ય છે એવા ગુરુભક્ત ગુરુજીને.

ઈ.સ. ૧૯૮૬માં કાકાશ્રીના અસ્થિ પધરાવવા પૂ. કાંતિકાકા સાથે અમો સહુ સાધક ભાઈઓ દિલ્હી, હરિદ્વાર, ઋષિકેશ થઈ બદ્રિનાથ ગયા હતા. ગુરુજી અને મંડળ હરિદ્વાર, ઋષિકેશથી દિલ્હી પાછા ફર્યા. અમો બદ્રિનાથ જઈને દિલ્હી આવ્યા. સવારે હું ગુરુજી પાસે બેઠો હતો. એ પહેલાં ધૂન કરતા એમને મને જોયો હતો. મને ગુરુજીએ પાસે બેસારીને એકદમ આત્મીયભાવે વાત કરતા કહ્યું કે, 'મારે તને એક વાત કરવી છે.' પછી કહે કે, 'કાકાશ્રીની નિશ્રામાં આપણે હતા ત્યારે તેમની સાથે ધૂન-ભજન કરી લેતા. એટલે પૂજા વિ. ન હોય તો ચાલે પરંતુ હવે જ્યારે સ્થૂળ દેહે કાકાશ્રી નથી તો તમો દરરોજ પૂજા પાથરીને વિધિપૂર્વક પૂજા કરો. તે મારી દૃષ્ટિએ ખૂબ જરૂરી છે.' મને તેમની વાત સહજ ગમી ગઈ અને મેં કહ્યું, 'હા ગુરુજી, હું હવેથી તે રીતે પૂજા કરીશ.' જેવી મેં વાત સ્વીકારી કે તરત જ ગુરુજીએ પોતાની પ્રસન્નતા બતાવતા કહ્યું કે, 'હું તને આજે મારી પ્રસાદિની પૂજા આપું છું. હવે તું તે દરરોજ કરજે.' સ્વધર્મ પાલનની સાચી સૂઝ આપનાર ગુરુજીને આજે પણ હું નિત્ય વંદન કરી રહ્યો છું.

કાકાશ્રી કાંઈ પણ બોલે કે કોઈ ક્રિયા કરે તો તેનું રહસ્ય ગુરુજી અચૂક બુદ્ધિમાં બેસે તેવું શોધી જ કાઢે અને કદાચ રહસ્ય ન પ્રાપ્ત થાય તો મિત્રોને પૂછીને કે કાકાશ્રીને જ ખુલ્લા દિલે પૂછીને જાણી લે.

કાકાશ્રી દિલ્હી મંદિરે બિરાજમાન હતા ને મુંબઈથી કોઈ મુક્તનો કાકાશ્રી માટે ફોન આવ્યો. ગુરુજીએ તુરત જ કાકાશ્રીને ફોન આપ્યો. કાકાશ્રીએ ફોનમાં વાત સાંભળી ને તરત જ બોલ્યા, ‘ત્યાં હવા નથી? ત્યાં હવા નથી? ત્યાં હવા નથી?’ એમ બે-ત્રણ વાર બોલીને ફોન પૂરો કર્યો. ગુરુજીના મનમાં આ વાતનો કોઈ મેળ બેઠો નહીં કે ‘કાકાશ્રીએ આ શું જવાબ આપ્યો? એવો કેવો પ્રશ્ન ને એવો કેવો જવાબ?’ ખૂબ મથામણને અંતે ખુલ્લા દિલના ગુરુજીએ કાકાશ્રીને રાત્રે પૂછયું કે, ‘આ તમે ફોનમાં ત્યાં હવા નથી? એ શું કહેતા હતા?’ કાકાશ્રી એકદમ જ બોલ્યા કે, ‘હું તેને એમ કહેતો હતો કે તું મને ફોન કરીને પૂછે છે તેને બદલે ત્યાં ધૂન કરીને પ્રાર્થના કરી હોત તો! બ્રહ્મતત્ત્વ સર્વત્ર છે. જે મને જવાબ આપે છે તે તમને પણ પ્રેરણા કરે છે.’ ગુરુજીને વાત સમજાઈ ગઈ પણ ગુરુજીની સ્વરૂપોના એક-એક હલનચલનને નિહાળવાની દૃષ્ટિ કેવી? એવી દૃષ્ટિથી અમો નિહાળતા થઈએ એ જ અંતરની પ્રાર્થના.

ઈ.સ. ૨૦૦૨ની સાલમાં ‘The Real Essence of Tantra’ પુસ્તકમાં ‘મંત્રશક્તિ’ના Chapterનું સ્વામિનારાયણ મંત્ર દ્વિશતાબ્દી નિમિત્તે અમોએ ગુજરાતી ભાષાંતર કરી એક નાની પુસ્તિકા તૈયાર કરેલ. લગભગ એક-બે વર્ષ બાદ અહીંયા ભક્તોની માંગણી એવી હતી કે જો તેનું હિન્દી ભાષાંતર થાય તો સારું. આ વાત મેં ગુરુજીને કરી હતી. ગુરુજીએ સહર્ષ તે વાત સ્વીકારી લીધી ને મને કહ્યું કે, ‘જરૂરથી હું તને તેનું ભાષાંતર કરી પુસ્તક તૈયાર કરાવી આપીશ.’ આ વાતને બે-ત્રણ વર્ષ વીતી ગયા. જ્યારે યાદ કરાવું ત્યારે કહે કે, ‘હવે થોડું જ કામ બાકી છે. બધું ભાષાંતર થઈ ગયું છે. પણ મારે તે ચેક કરવાનું બાકી છે.’ છેલ્લે-છેલ્લે તો કહે, ‘હવે બે-ત્રણ પાના જ બાકી છે.’ અંતે ૨૦૦૯ની સાલમાં તે પુસ્તક જ્યારે પૂ. વશીભાઈના હસ્તે ગુરુજીના પ્રાગટ્યપર્વે ઉદ્‌ઘાટિત થયું અને તેના દર્શન કર્યા. ત્યારે અંતરથી શબ્દો નીકળી ગયા કે, Excellent અને Perfect કામ થયું છે. ગુરુજીની ચીવટાઈ, ચોકસાઈ અને સંપૂર્ણતઃ સર્વોત્તમ કાર્ય માટે કંઈ કહેવાપણું છે જ નહીં. જે આવા કાર્યોમાં આટલી જહેમત લેતા હોય તે આપણા ચૈતન્યમાં કોઈ ડાઘ કેમ રહેવા દેશે? નહીં જ ચલાવી લે. તો હે ગુરુજી, આપ અમ સહુનું પણ આવું જ ઘડતર કરજો, કરી જ રહ્યા છો તે કેમ ભૂલાય! એવા ગુરુદેવ ગુરુજીને કોટિ કોટિ પ્રણામ.

ઈ.સ. ૧૯૯૪માં પ.પૂ. હરિભાઈ સાહેબ અને અમો સહુ મુંબઈ મંડળના ભક્તો દિલ્હી મંદિરની પ્રતિષ્ઠા નિમિત્તે દિલ્હી આવ્યા. સ્ટેશનથી મંદિરે જવા માટે ગાડીઓ અને બસની વ્યવસ્થા કરી હતી. બન્યું એવું કે હરિભાઈ સાહેબ સહુ ભક્તો સાથે બસમાં બેસી ગયા. આ બાજુ હરિભાઈ સાહેબને કારમાં લઈ જવાનું નક્કી થયેલ. તેથી બધા તેમને શોધવા મંડ્યા. તેઓ તો બસમાં બેસી ગયેલ તેથી તેમણે કહ્યું, ‘કંઈ વાંધો નહીં, હમ મંદિર પહુઁચ જાયેંગે.’ આખરે પૂ. આનંદીદીદીએ બસ પાસે આવીને કહ્યું કે, ‘સાહેબ, આપ ગાડીમાં પધારો. તમો બસમાં આવ્યા એવી ગુરુજીને ખબર પડશે તો ગુરુજી મને દરવાજામાં દાખલ નહીં થવા દે. માટે અમારા ખાતર પણ તમો કારમાં બેસો.’ છેવટે સાહેબ કારમાં બેસીને મંદિરે આવ્યા. આ પ્રસંગ નજરે નિહાળનાર પૂ. અશ્વિનભાઈ (તારદેવ)ને હૃદયમાં Touch કરી ગયો કે કેવું માહાત્મ્ય ગુરુજીએ સેવકોના હૃદયમાં રેડ્યું છે. આવા માહાત્મ્યના મહાસાગરમાં અમો સહુ સહજ ડૂબેલા રહી, અમારા હર પલના વિચાર, વાણી ને વર્તન કરતા થઈએ એવી આપના અમૃત પ્રાગટ્યપર્વે અંતરની પ્રાર્થના.

આવા તો અનેક પ્રસંગો જોયા છે, સાંભળ્યા છે અને અનુભવ્યા છે. ગુરુજીનું સર્વ કાર્ય કેવળ કાકાશ્રીલક્ષી દેખાય છે.

તેમના સર્વ ભક્તોમાં કાકાજી દર્શાય...

'તાડદેવ' નામાભિધાનમાં પણ કાકાજી દર્શાય...

'સ્વામિનારાયણ માર્ગ' ને 'કાકાજી લેન' તરીકે દિલ્હીના માર્ગને નામ અપાવવું તેમાં પણ કાકાજી દર્શાય...

છપૈયા મંદિરે જન્મસ્થાનમાં તકતી મૂકાવવાના વિચારમાં કાકાજી દર્શાય...

કાકાશ્રીની Stamp ભારત સરકાર દ્વારા પ્રકાશિત કરાવવાના કાર્યમાં કાકાજી દર્શાય...

સાધક બહેનોના 'અક્ષરજ્યોતિ' મકાનના સર્જનમાં પણ કાકાજી દર્શાય...

'તીન ફરવરી પાર્ક'માં કાકાજી દર્શાય અને

કાકાજીની મૂર્તિમાં જીવંત કાકાજી દર્શાય.

ગુરુજીના એવાં કયાં કાર્યો છે જેમાં કાકાજી ને કાકાજીના સિદ્ધાંતનું દર્શન ન થાય? એવા ગુરુજીનું વર્ણન શું કરવું? તેમના અમૃત પ્રાગટ્યે અંતરની સહજ પ્રાર્થના વહ્યા કરે છે. ધન્યતા... ધન્યતા... ધન્યતા...ના શબ્દો વહ્યા કરે છે. કાકાજી... કાકાજી... કાકાજી... અંતરમાં ગુંજ્યા કરે છે.

જય સ્વામિનારાયણ.

– પૂ. ભરતભાઈ મહેતા (પવઈ)

[हिन्दी अनुवाद]

।। स्वामिश्रीजी ।।

गुरुहरि प.पू. काकाजी का पसंदीदा पात्र यानि – प.पू. गुरुजी। शिल्पी जैसे अपने शिल्प की संभाल रखता है, उसकी हिफ़ाज़त करता है और उसमें अपने मन में सोची हुई 'कृति' को हुबहु करता है; ऐसा ही कुछ काकाजी और गुरुजी के संबंध में देखने को मिलता है। आज वाकई, गुरुहरि काकाजी, गुरुजी रूप अपनी कृति को निहार कर खुशी से फूले नहीं समाते होंगे।

आज, गुरुजी ने दिल्ली-पंजाब में कुटुंबभावना का जो पूर बहाया है, वह देख कर...

उनके द्वारा काकाजी के प्रति दर्शाई गुरुभक्ति देख कर...

कई प्रसंग पर (प्रगट) गुणातीत स्वरूपों के साथ का उनका सहज, स्वाभाविक, खुल्ले दिल के संबंध का दर्शन करके...

काकाजी के सच्चे सैनिक बन कर जीने के लिए सेवकों को दी सुंदर सूझ के फलस्वरूप आदर्श सेवकों का जीवन निहार कर...

काकाजी के जीवन को निहारने की अद्भुत दृष्टि का दर्शन कराने वाले गुरुजी को...

उनके 'योगी परिवार अमृत आनंद महोत्सव' पर कोटि-कोटि प्रणाम सहज ही हो जाते हैं।

लगभग 1997 में काकाजी और गुरुजी के प्रसादिक स्थानों का दर्शन करने दिल्ली मंडल मुंबई आया था। काकाजी की 'एग्री ओरियन्ट' ऑफिस का दर्शन करने हम सभी गुरुजी के साथ फोर्ट पहुँचे। गुरुजी ने बिल्डिंग ढूँढ तो ली, परंतु पास-पास दो-तीन एक जैसी ही बिल्डिंग्स होने के कारण यह पक्का नहीं कर पाते थे कि कौन-सी बिल्डिंग है। हम लोग गुरुजी के साथ एक बिल्डिंग में तीन मंजिल चढ़ गए। लेकिन वही काकाजी की

ऑफिस है, यह तय नहीं हो पाया। आख़िर एक ही बिल्डिंग में तीन-चार बार तीन-चार मंजिल चढ़े और सारी निशानियाँ बता कर (गुरुजी ने) कहा कि *'यही काकाजी की ऑफिस थी।'* यूँ, गुरु के प्रासादिक स्थान के माहात्म्य का स्पष्ट दर्शन अपने देह को गिने बिना कराया। यह प्रसंग आज भी मेरे हृदय में छाप छोड़े हुए है। धन्य है ऐसे गुरुभक्त गुरुजी को।

1986 में काकाजी की अस्थियाँ पधराने पू. कांतिकाका के साथ हम सभी साधक भाई दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेश होकर बद्रिनाथ गए थे। गुरुजी और मंडल हरिद्वार, ऋषिकेश से दिल्ली वापिस आ गया। हम बद्रिनाथ जाकर दिल्ली आए। सुबह मैं गुरुजी के पास बैठा था। इससे पहले उन्होंने मुझे धुन करते हुए देखा था। मुझे गुरुजी ने अपने पास बिठा कर एकदम आत्मीयभाव से बात करते हुए कहा – *'मुझे तुझसे एक बात करनी है।'* फिर बोले –

'काकाजी की निश्रा में हम जब थे, तब उनके साथ धुन-भजन कर लेते थे। सो, पूजा इत्यादि नहीं करते हों, वो चल जाता था। परंतु अब जब स्थूल रूप से काकाजी नहीं हैं, तो तुम हर रोज पूजा बिछा कर विधिपूर्वक पूजा करो। मेरी दृष्टि से यह खूब जरुरी है।'

मुझे उनकी बात सहज जँच गई और मैंने कहा – *'हाँ गुरुजी, मैं अब से इस तरीके से पूजा करूँगा।'* जैसे ही मैंने बात स्वीकारी कि तुरंत ही गुरुजी ने अपनी प्रसन्नता बताते हुए कहा – *'मैं तुझे आज मेरी प्रसादी की पूजा देता हूँ। अब तू यह हर रोज करना।'* स्वधर्म पालन की सच्ची सूझ देने वाले गुरुजी को आज भी मैं नित्य वंदन कर रहा हूँ।

काकाजी कुछ भी बोलें या कोई क्रिया करें, तो उसका रहस्य बुद्धि में अचूक बैठ जाए, इस हेतु वे ऐसा कुछ ढूँढ निकालते और यदि रहस्य न मिले, तो मित्रों को पूछ कर या काकाजी से ही खुल्ले दिल से पूछ कर वे समझ लेते।

काकाजी दिल्ली मंदिर में विराजमान थे और मुंबई से किसी मुक्त का काकाजी के लिए फोन आया। गुरुजी ने तुरंत ही काकाजी को फोन दे दिया। फोन पर बात सुनते ही काकाजी तुरंत बोले – *'वहाँ हवा नहीं है क्या ? वहाँ हवा नहीं है क्या ? वहाँ हवा नहीं है क्या ?'* यूँ दो-तीन बार बोल कर फोन पूरा किया। गुरुजी के मन में इस बात का कोई मेल बैठा नहीं कि *'काकाजी ने यह क्या जवाब दिया ? ऐसा कैसा प्रश्न जो ऐसा जवाब ?'* खूब कशमकश के बाद अंत में गुरुजी ने खुल्ले दिल से रात को काकाजी से पूछा कि *'आप फोन पर वहाँ हवा नहीं क्या – यह क्या पूछा करते थे ?'* काकाजी एकदम ही बोले कि *'मैं उसको ऐसा कह रहा था कि तू मुझे फोन करके पूछता है, उसकी बजाय वहीं धुन करके प्रार्थना करी होती तो! ब्रह्मतत्त्व तो सर्वत्र है। जो मुझे जवाब देता है, वह तुम्हें भी प्रेरणा करता है।'* गुरुजी को बात समझ में आ गई; लेकिन स्वरूपों के एक-एक हलन-चलन को निहारने की गुरुजी की दृष्टि कैसी ? ऐसी दृष्टि से हम निहारते हो जाएं ऐसी अंतर की प्रार्थना।

2002 की साल में '**धी रियल इसेन्स ऑफ तान्त्र**' पुस्तक के '**मंत्रशक्ति**' प्रकरण का स्वामिनारायण मंत्र द्विशताब्दी निमित्त हमने गुजराती अनुवाद करके एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित करी थी। लगभग एक-दो वर्ष बाद यहाँ के भक्तों (मुंबई के हिन्दीभाषी) की ऐसी मांग थी कि यदि इसका हिन्दी अनुवाद हो तो अच्छा। यह बात मैंने गुरुजी को करी थी। गुरुजी ने हर्ष से यह बात स्वीकार कर मुझे कहा – *'मैं इसका अनुवाद करके तुम्हें जरूर पुस्तक तैयार करवा दूँगा।'* इस बात को दो-तीन साल बीत गए। जब भी याद करवाता तो (गुरुजी) कहते – *'अब थोड़ा ही काम बाकी है। सारा अनुवाद हो गया है। लेकिन मुझे उसे चॅक करना बाकी है।'* आख़िर-

आख़िर में तो कहते – *'अब दो-तीन पेज ही बाकी हैं।'* अंत में 2009 के वर्ष में वह पुस्तक जब पू. वशीभाई के हस्तों गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर उद्घाटित हुई और उसका दर्शन किया, तब अंतर से शब्द निकल गए कि – **एक्सॅलॅन्ट** और **परफॅक्ट** काम हुआ है। गुरुजी की लगनभरी होशियारी, चौकसी और संपूर्णतः सर्वोत्तम कार्य के बारे कुछ कहने का तो है ही नहीं। जो ऐसे कार्यों के लिए इतनी ज़हमत उठाते हैं, वे हमारे चैतन्य पर कोई दाग़ भला कैसे रहने देंगे? चलाएंगे ही नहीं। तो हे गुरुजी! आप हम सब को भी ऐसा ही गढ़ना और कर ही रहे हो वह तो कैसे भूलें! ऐसे गुरुदेव गुरुजी को कोटि-कोटि प्रणाम।

1994 में प.पू. हरिभाई साहेब और हम सभी मुंबई मंडल के भक्त दिल्ली मंदिर की (मूर्ति) प्रतिष्ठा के निमित्त दिल्ली आए थे। स्टेशन से मंदिर जाने के लिए गाड़ियों और बस की सुविधा करी हुई थी। ऐसा हुआ कि हरिभाई साहेब सभी भक्तों के साथ बस में बैठ गए; जबकि हरिभाई साहेब को कार में ले जाना था। सो, सभी उन्हें ढूँढने लगे। वे (हरिभाई साहेब) तो बस में बैठ गए थे, सो उन्होंने कहा – *'कोई हर्जा नहीं, हम मंदिर पहुँच जाएंगे।'* आख़िर पू. आनंदी दीदी ने बस के करीब आकर कहा –

'साहेब, आप गाड़ी में पधारो। आप बस में आए हो, ऐसा यदि गुरुजी को पता चलेगा तो गुरुजी मुझे (मंदिर के) दरवाजे में दाखिल नहीं होने देंगे। सो, हमारी खातिर भी आप कार में बैठो।'

आख़िर साहेब कार में बैठ कर मंदिर आए। यह प्रसंग को निहारने वाले पू. अश्विनभाई (ताड़देव) के हृदय को वह खूब छू गया कि गुरुजी ने सेवकों के हृदय में कैसा माहात्म्य भरा है! ऐसे माहात्म्य के महासागर में हम सब सहज डूबे रहें, हमारे हर पल के विचार, वाणी और वर्तन ऐसे हो जाएं – ऐसी आपके अमृतपर्व पर अंतर की प्रार्थना।

ऐसे तो कई प्रसंग देखे हैं, सुने हैं और अनुभव भी किए हैं। गुरुजी के सारे कार्य केवल काकाजीलक्षी ही दिखाई देते हैं।

❋ उनके सभी भक्तों में काकाजी दिखाई देते हैं...
❋ 'ताड़देव' नामकरण में भी काकाजी दिखाई देते हैं...
❋ दिल्ली के (एक) मार्ग को 'स्वामिनारायण मार्ग' और 'काकाजी लेन' नाम दिलवाना, उसमें भी काकाजी दिखाई देते हैं...
❋ छपैया मंदिर में (श्रीजी महाराज के) जन्मस्थान में तख़्ती लगवाने के विचार में काकाजी दिखाई देते हैं...
❋ भारत सरकार द्वारा काकाजी की स्टॅम्प जारी करवाने के कार्य में काकाजी दिखाई देते हैं...
❋ साधक बहनों के 'अक्षरज्योति' मकान के सर्जन में भी काकाजी दिखाई देते हैं...
❋ 'तीन फरवरी पार्क' में काकाजी दिखाई देते हैं
और...
❋ काकाजी की मूर्ति में **जीवंत काकाजी** दिखाई देते हैं!

गुरुजी के ऐसे कौन से कार्य हैं जिसमें काकाजी और काकाजी के सिद्धांत का दर्शन न होता हो? ऐसे गुरुजी का वर्णन क्या करें? उनके अमृत प्रागट्य पर अंतर से सहज प्रार्थना बहती रहती है। धन्यता... धन्यता... धन्यता... के शब्द बहा ही करते हैं। काकाजी... काकाजी... काकाजी... अंतर में गूँजा करता है।

जय स्वामिनारायण!

– प. पू. भरतभाई (पवई)

।। स्वामिश्रीजी ।।

सौरभ - २

प.पू. गुरुजी के अमृतपर्व पर...

प.पू. गुरुजी यानि गुरुहरि योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी महाराज का संकल्प-सर्जन! काकाजी महाराज के वारिस! काकाजी का अनमोल कोहिनूर हीरा!

श्रीजी महाराज का पूर्व से ही संबंध; पूर्वाश्रम के पिताश्री प.भ. धनप्रसादभाई महेता और मातुश्री प.भ. ललिताबा! प.भ. धनप्रसादभाई का कुटुंब मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी के परम कृपापात्र शिष्य करसनजी देसाई (सुरत) का परिवार था, उसमें प.पू. गुरुजी का प्रागट्य हुआ। बचपन से ही अति तेजस्वी, बुद्धिशाली और मेधावी - जबरदस्त स्मरणशक्ति वाले – ऐसे गुरुजी का बचपन मुंबई में बीता। इ.स. 1958 में Science विषय में ग्रॅज्युएट हुए। 1953 में 'सुंदराबाई' हॉल में योगीजी महाराज के साथ काकाजी से पहली भेंट हुई और काकाजी के पहले ही दर्शन में उनसे मानो प्रथम दृष्टि में ही प्यार (First sight love) हो गया।

उस समय योगीजी महाराज का अभिप्राय पढ़े - लिखे युवकों को साधु बनाने का था। योगीजी महाराज के आशीर्वाद और काकाजी व सोनाबा के प्यार के वश होकर इस योजना को संपूर्ण सहकार देते हुए इन्होंने योगीजी महाराज के करकमलों से इ.स. 1961 में दीक्षा ली और... उनकी भगवी सेना में जुड़ गए। इ.स. 1966 में जब संस्था से विमुख होने का प्रकरण हुआ, तो प.पू. बापा के अभिप्राय की भक्ति में जुट जाने काकाजी और पप्पाजी की सेरेछाया में सरल मार्ग छोड़ कर, कंटक का मार्ग अपनाया और प.पू. स्वामिजी तथा प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के संग सोखड़ा और सांकरदा रह कर कठोर साधना की।

इ.स. 1969 में गुरुवर्य योगीजी महाराज ने संस्था में जब लगातार संकल्प दोहराया था कि उत्तर भारत दिल्ली में श्री अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर का निर्माण होना चाहिए और अक्षर - पुरुषोत्तम की मूर्तियों की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, तब... स्थूल रूप से दूर होते हुए भी काकाजी ने योगीजी महाराज का वह संकल्प झेला। अपने प्रिय पात्र गुरुजी को चुन कर उन्हीं दिनों दिल्ली जाने की आज्ञा दी। इन दिनों संतों का दिल्ली जाने का कोई मक़सद नहीं था, न वहाँ पर रहने - करने की कोई सुविधा थी। फिर भी काकाजी के वचन में अटूट विश्वास और काकाजी के प्रति निरतिशय प्रेम के कारण वे दिल्ली गए, 'भारत साधु-समाज' में रहे और इस प्रकार फिर एक कठिन दिव्य यात्रा का प्रारंभ हुआ।

इ.स. 1973 में जब काकाजी को पहली विदेश यात्रा पर जाना था, तब काकाजी ने गुरुजी को मुंबई बुलाया और उनसे Lord Swaminarayan and Applied Brahmagyan की Brochure अंग्रेजी में तैयार करवाई। गुरुजी अंग्रेजी जानते हैं, सो उन्होंने Proof Reading वगैरह बहुत अच्छी तरह से किया। इस सेवा से गुरुजी ने काकाजी की अंतर की प्रसन्नता पाई।

इ.स. 1974 में काकाजी ने सभी स्वरुपों तथा पू. कांतिकाका, प.भ. छगनमामा (मोटा) वगैरह को दिल्ली बुलाकर शिविर का आयोजन किया तथा सहस्त्रधारा में भी शिविर करी। जब परिस्थिति किसी भी तरह सानुकूल नहीं थी, ऐसे समय पर भी इस तरह के शिविर का आयोजन करके गुरुजी ने काकाजी और सभी स्वरुपों तथा सभी भक्तों की हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त की।

इ.स. 1975 से 1978 तक दिल्ली में सभी भक्तों को सत्संग एवम् सत्संग सेवा कार्य के लिए तैयार

किया। इ.स. 1978 में काकाजी के 'हीरक महोत्सव' में भी Real Essence of Tantra और Panchyagna जैसी किताबें अंग्रेजी में तैयार करवाने में काकाजी की बहुत बड़ी सेवा की।

इ.स. 1981 में काकाजी का संकल्प था कि दिल्ली में भी भगवान स्वामिनारायण की द्विशताब्दी महोत्सव का आयोजन होना चाहिए। काकाजी के संकल्प से गुरुजी ने गुजराती समाज में तत्कालीन केन्द्रिय मंत्री श्री एच.के.एल. भगत (Information and Broadcasting Minister) की अध्यक्षता में मनाया और काकाजी की प्रसन्नता पाई।

इ.स. 1983 से 1985 के दौरान काकाजी की आज्ञा से दिल्ली, कुरुक्षेत्र, लुधियाना, जगरांव, मोगा, सवद्धी, जलंधर अमृतसर, छत्तरपूर आदि स्थानों में सत्संग फैलाया। अनेक जीवों को सत्संग की महिमा समझा कर उन्हें सेवाभावी सत्संगी बनाकर, सच्चे समर्पित भक्त तैयार किए और काकाजी की प्रसन्नता पाई।

इ.स. 1986 में काकाजी के स्वधामगमन के बाद सभी संत, संत बहनें, गृहस्थ भाई-भाभियाँ, कुटुंब-परिवारों को न केवल संभाला, बल्कि हर प्रसंग पर उनसे धुन-भजन करा के उन्हें भजनिक बनाया और एकांतिक धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ाया।

गुरुजी की गुरुभक्ति एवम् पराभक्ति –

गुरुजी की हर एक क्रिया, हर एक अभियान काकाजी की प्रसन्नता और प्रत्यक्ष की भक्तिरुप होता है। इ.स. 1985 में काकाजी महाराज ने जो भूमिपूजन किया था, वहाँ अथक परिश्रम से कठिनाईयाँ और माया को पार करके गुरुजी ने इ.स. 1994 में 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर' बनवा कर अक्षर-पुरुषोत्तम, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी महाराज की मूर्तियों की पप्पाजी महाराज एवं हरिप्रसादस्वामिजी व प्रगट गुणातीत स्वरूपों के करकमलों द्वारा प्रतिष्ठा करवाई। साथ ही अशोकविहार में मंदिर के आगे से गुज़रते मुख्य मार्ग का नाम दिल्ली-सरकार द्वारा **'स्वामिनारायण मार्ग'** रखवाया एवं उसके साथ जुड़ी संपूर्ण लेन का नामकरण **'काकाजी लेन'** करवा कर काकाजी को अमर कर दिया।

इसी तरह **काकाजी महाराज का 'इंडियन पोस्टल स्टॅम्प'** जारी करवा कर काकाजी को 'इंडियन गवर्नमेन्ट रॅकॉडर्स' में अमर कर दिया। इससे भी आगे मंदिर के बगल में ही **'तीन फरवरी पार्क'** बना कर, पहली बार ऐसा नामकरण करवा कर न केवल दिल्ली में किंतु समग्र विश्व में, सभी का ध्यान **काकाजी के साक्षात्कार दिन – 3 फरवरी 1952** के मर्म की ओर खींचने की चेष्टा की और... अपने गुरु के प्रति अद्भुत भक्ति अदा की है।

भजनिक गुरुजी –

प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी गुरुजी को 'भजनिक' कहते हैं। उन्होंने हर कार्य में – चाहे वह व्यावहारिक हो या आध्यात्मिक सिर्फ भजन का ही बल लिया है। साधु होने के पश्चात् भी सांकरदा हो, ताड़देव हो या दिल्ली, वे आधी रात को उठकर भजन करते।

अभी हाल ही में उन्होंने सब को रोज सुबह 6.55 से 7.15 तक जो जहाँ भी हो वहाँ 'फीक्स्ड टाईम धुन' करने की आज्ञा दी है एवम् स्वयं भी उस समय धुन में बैठ जाते हैं।

काकाजी की मूर्ति पधराने के प्रसंग में भी उन्होंने भजन का ही बल लिया। आनंदी दीदी का हार्ट का

ऑपरेशन हो, परछाईं दीदी का कीडनी ट्रांस्प्लांट जैसा मेजर ऑपरेशन हो, गौरी दीदी का कैंसर का ऑपरेशन हो या अन्य किसी भी सेवक या हरिभक्त की कैसी भी जटिल समस्या हो, सभी प्रसंगों में उन्होंने खुद भजन किया और सभी से करवाया। फलस्वरुप सब कार्य सफलतापूर्वक संपूर्ण हुए और सभी को भगवान के बल से जीना सिखा दिया।

'गुणातीत परिवार' की भावना और गुरुजी –

13 मार्च की सायं 'तीन फरवरी पार्क' का उद्घाटन करके गुरुजी के साथ मंदिर वापिस आ रहे थे, उसी समय गुणातीत ज्योत – विद्यानगर से पू.ज्योतिबेन का फोन आया कि *'आज आप के जन्मदिन पर हमने एक नई बस खरीदी है।'* गुरुजी ने काँग्रॅच्युलॅशन्स कह कर तुरंत कहलवाया – *'बस में पहला डीज़ल भरने की सेवा हम करेंगे। टँकी की कॅपेसिटी कितनी है ?'* तब जवाब मिला – *'लगभग 5000/- रुपये का होता है।'* गुरुजी ने अपने सेवक (जो विद्यानगर में रहता है) को फोन किया और तुरंत 5000/- रु. पू. देवीबेन को भिजवा दिए। कैसा अपनापन!

ऐसे ही एक बार पप्पाजी और गुणातीत ज्योत से जुड़े कुछ भक्त यात्रा में दिल्ली गए थे। उनमें से एक भक्त की तबियत अचानक बिगड़ी और वह धाम में चले गए। पप्पाजी ने गुरुजी से कहा, *'मैं दिल्ली आ रहा हूँ।'* तब गुरुजी ने पप्पाजी को सहज ही कहा, *'पप्पाजी, आप बिल्कुल चिंता मत करना। मैं सब कुछ संभाल लूँगा और सॅट करते हुए आपको फोन करता रहूँगा।'*

गुरुजी ने सब मेडिकल, लीगल कार्यवाही वगैरह करके भक्त की बॉडी भी लंदन पहुँचाने की व्यवस्था कर दी और साथ में जो भक्त थे उन सभी के लिए भी इन्तजाम करवा दिया। गुरुजी पर अतिशय प्रसन्न होकर, पप्पाजी के दिल से आशीर्वाद मानो फिसल गए!

संबंधयोग और गुरुजी –

गुरुजी के संबंध में जो भी आता है वह निहाल हो जाता है। इ.स. 2002 में सुप्रसिद्ध पार्श्वगायक श्री महेन्द्र कपूर गुरुजी के योग में आए। उन्होंने स्टेज पर प.पू. काकाजी का भजन गाया। गुरुजी ने स्टेज पर ही उनको स्वामिजी के हाथों कंठी पहनवाई। गुरुजी की भावना यह थी कि स्वामिजी जैसे परम पवित्र संत के हाथों वे स्वामिनारायण की कंठी पहन लें, तो उनका अक्षरधाम पक्का हो जाएगा ।

फिर तो उन्हें सोनावाला बिल्डिंग्स – ताड़देव स्थित काकाजी के निवासस्थान पर बुलाकर काकाजी की विशिष्ट स्मृति दी। साथ ही पूरे मुंबई मंडल को ढोसा और गोला खिलाकर भक्तों की मूर्ति भी लूट ली ।

गुरुजी को काकाजी के प्रति इतना अधिक प्रेम कि वे जब भी वे ताड़देव आते, तो एक पल के लिए भी काकाजी का लाभ लेना छोड़ते नहीं थे। जो बहनें काकाजी का लाभ लेने आती थीं, वे भी इंतजार में रहती कि कब गुरुजी वहाँ से उठें, तो उन्हें भी काकाजी का लाभ मिले।

अरे! जब भी गुरुजी दिल्ली से आते थे, तो ट्रेन में ही स्नानादिक क्रिया पूरी करके आते थे; ताकि काकाजी का लाभ अधिक से अधिक ले सकें।

एक बार वे काकाजी के लिए स्नान करने का स्टूल लेकर आए। तब काकाजी ने हरखचंदभाई से कहा, *'देखो राजा, मेरा नहाने का पाटला आ गया।'* इस तरह काकाजी ने उनकी सेवा ग्रहण की।

प्रगट और प्रत्यक्ष के पुजारी गुरुजी –

हाल ही में अ.नि. गोरधनभाई कापड़िया (मुंबई) की पौत्री चि. तेजल अपनी माँ के साथ दिल्ली गई थी। गुरुजी ने सेवक से कहलवाया, *'इसे मँगो आईसक्रीम खिलाओ।'* तब उसने कहलवाया कि, *'मैंने आम नहीं खाने की मन्नत रखी है।'* तुरंत ही गुरुजी ने पूछवाया, *'यह आज्ञा तुम्हें भरतभाई या वशीभाई ने दी है ?'* तेजल ने 'ना' कही । तब गुरुजी ने कहलवाया, *'हमें प्रगट या प्रत्यक्ष का योग होने के बाद, उनकी आज्ञा – वही हमारी मन्नत!'* कैसी प्रगट के प्रति भावना !

गुरुजी अपनी डायरी में सभी सत्संगियों के जन्मदिन नोट करके रखते हैं और रोज उन सभी को सुबह फोन करके बधाई भी देते हैं। इस पर मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बात याद आती है – आज तो कल्याणजीभाई के लड़के को अपनी गोद में बिठाकर बोले कि *'उसका सामर्थ्य तो अवतार से भी अधिक है।'* गुरुजी ऐसी महिमावाली दृष्टि से प्रगट के भक्तों को देखते हैं।

पिछले चार-पाँच सालों से गुरुजी के प्रागट्योत्सव पर प.पू. साहेब आते हैं। तो गुरुजी उनको अलग-अलग पहनावे पहनाते हैं। जैसे कि काकाजी का धोती-कुर्ता, स्वामिनारायण मंत्र प्रिन्ट किया हुआ शर्ट! इस में भी गुरुजी की यही भावना दिखती है कि साहेब जैसे गुणातीत स्वरुप को भी ठाकुरजी की भाँति क्यों न ड्रेसअप किया जाए ?

जय स्वामिनारायण।

– पू. वशीभाई (पवई)

[ગુજરાતી ભાષાંતર] ।। સ્વામિશ્રીજી ।।

પ.પૂ. ગુરૂજીના અમૃતપર્વે...

પ.પૂ. ગુરૂજી એટલે ગુરૂહરિ યોગીજી મહારાજ અને ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજનું સંકલ્પ-સર્જન! કાકાજીના વારસદાર! કાકાજીનો અણમોલ કોહિનૂર હીરો!

પૂર્વથી જ શ્રીજી મહારાજનો સંબંધ; પૂર્વાશ્રમના પિતાશ્રી પ.ભ. ધનપ્રસાદભાઈ મહેતા અને માતુશ્રી પ.ભ.લલિતાબા! પ.ભ. ધનપ્રસાદભાઈનું કુટુંબ–મૂ.અ.મૂ. ગુણાતીતાનંદસ્વામીના પરમ કૃપાપાત્ર શિષ્ય કરસનજી દેસાઈ (સુરત)નો પરિવાર હતો– એમાં પ.પૂ. ગુરુજીનું પ્રાકટ્ય થયું. પહેલેથી જ અતિ તેજસ્વી, બુદ્ધિશાળી અને મેધાવી-જબરજસ્ત યાદશકિતવાળા - એવા ગુરૂજીનું નાનપણ મુંબઈમાં વીત્યું. ઇ.સ. ૧૯૫૮માં સાયન્સના ગ્રૅજ્યુઍટ થયા. ૧૯૫૩માં 'સુંદરાબાઈ' હૉલમાં યોગીજી મહારાજની સાથે કાકાશ્રીને પ્હેલી વાર મળ્યા અને કાકાશ્રીના પ્હેલા દર્શને જ, જાણે એમની સાથે પ્રથમ દ્દષ્ટિએ જ પ્રીતિ (First Sight Love) **થઈ ગઈ.**

તે વખતે યોગીજી મહારાજનો અભિપ્રાય ભણેલા-ગણેલા યુવકોને સાધુ બનાવવાનો હતો. યોગીજી મહારાજના આશીર્વાદે તેમજ કાકાશ્રી અને સોનાબાના પ્રેમને વશ થઈ આ યોજનાને સંપૂર્ણ સહકાર આપતા એમણે યોગીજી મહારાજના વરદ્ હસ્તે ઇ.સ.૧૯૬૧માં દીક્ષા લીધી અને... એમની ભગવી સેનામાં જોડાઈ ગયા. ઇ.સ. ૧૯૬૬માં જ્યારે સંસ્થાથી વિમુખ થવાનું પ્રકરણ થયું, ત્યારે પ.પૂ. બાપાના અભિપ્રાયની ભકિતમાં 'યાહોમ' થઈ કાકાશ્રી અને પપ્પાજીની નિશ્રામાં સરળ માર્ગ મૂકીને, કાંટાળો માર્ગ અપનાવી પ.પૂ. સ્વામિજી ને પ.પૂ. અક્ષરવિહારીસ્વામિજીના સંગે સોખડા અને

સાંકરદા રહી કઠોર સાધના કરી.

ઇ.સ.૧૯૬૯માં ગુરુવર્ય યોગીજી મહારાજે સંસ્થામાં જ્યારે વારંવાર સંકલ્પ કર્યો કે ઉત્તર ભારત-દિલ્હીમાં શ્રી અક્ષરપુરૂષોત્તમ મંદિરનું નિર્માણ થવું જોઈએ અને અક્ષર-પુરૂષોત્તમની મૂર્તિઓની પ્રતિષ્ઠા થવી જોઈએ ત્યારે સ્થૂળરૂપે દૂર હોવા છતાં કાકાશ્રીએ યોગીજી મહારાજનો એ સંકલ્પ ઝીલ્યો. પોતાના પ્રિયપાત્ર ગુરૂજીને પસંદ કરીને એ જ અરસામાં દિલ્હી જવાની આજ્ઞા કરી. એ દિવસોમાં સંતોને દિલ્હી જવાનું કોઈ પ્રયોજન ન્હોતું કે ત્યાં રહેવા-કરવાની કોઈ સગવડ પણ ન્હોતી. તો પણ, કાકાશ્રીના વચનમાં અતૂટ વિશ્વાસે અને કાકાશ્રી પ્રત્યેની અતિશય પ્રીતિએ કરીને દિલ્હી ગયા, 'ભારત સાધુ સમાજ'માં રહ્યા અને આમ ફરી એક કઠણ દિવ્ય યાત્રાનો આરંભ થયો.

ઇ.સ. ૧૯૭૩માં જ્યારે કાકાશ્રી પ્હેલી વિદેશ યાત્રાએ જવાના હતા, ત્યારે કાકાજીએ ગુરૂજીને મુંબઈ બોલાવ્યા અને એમની પાસે Lord Swaminarayan and Applied Brahmagyanની Brochure અંગ્રેજીમાં તૈયાર કરાવડાવી. ગુરૂજીને અંગ્રેજી આવડતું હોવાથી એમણે Proof reading વગેરે ખૂબ જ સરસ રીતે કર્યું. આ સેવાથી ગુરૂજીએ કાકાશ્રીનો અંતરનો રાજીપો મેળવ્યો.

ઇ.સ. ૧૯૭૪માં કાકાશ્રીએ બધાં સ્વરૂપોને અને પૂ. કાંતિકાકા, પ.ભ. છગનમામા (મોટા) વિગેરેને દિલ્હી બોલાવી એક શિબિરનું આયોજન કર્યું હતું અને સહસ્ત્રધારામાં પણ શિબિર કરી. જ્યારે પરિસ્થિતિ કોઈ પ્રકારે સાનૂકૂળ ન્હોતી, એવા વખતે પણ આવી શિબિરની ગોઠવણી કરી ગુરુજીએ કાકાશ્રી અને બધાં જ સ્વરૂપો તથા બધાં જ મુક્તોનો અંતરનો રાજીપો મેળવ્યો.

ઇ.સ. ૧૯૭૫થી ૧૯૭૮ સુધી દિલ્હીમાં બધાં ભક્તોને સત્સંગ અને સત્સંગના સેવા કાર્ય માટે તૈયાર કર્યા. ઇ.સ. ૧૯૭૮માં કાકાશ્રીના 'હીરક મહોત્સવ'માં પણ Real Essence of Tantra અને Panchyagna જેવી અંગ્રેજી પુસ્તિકા તૈયાર કરાવવામાં કાકાશ્રીની બહુ મોટી સેવા કરી.

ઇ.સ.૧૯૮૧માં કાકાશ્રીનો સંકલ્પ હતો કે દિલ્હીમાં પણ ભગવાન સ્વામિનારાયણની દ્વિશતાબ્દી મહોત્સવનું આયોજન થવું જોઈએ. કાકાશ્રીના સંકલ્પે ગુરૂજીએ ગુજરાતી સમાજમાં તત્કાલીન કેન્દ્રિય મંત્રી શ્રી એચ.કે.એલ. ભગત (Information and Broadcasting Minister)ની અધ્યક્ષતામાં એ ઊજવ્યો અને કાકાશ્રીને રાજી કર્યા.

ઇ.સ.૧૯૮૩થી ૧૯૮૫ સુધી કાકાશ્રીની આજ્ઞાથી દિલ્હી, કુરૂક્ષેત્ર, લુધિયાણા, જગરાંવ, મોગા, સવદ્ધી, જલંધર, અમૃતસર, છત્તરપુર જેવા સ્થળોએ સત્સંગ ફેલાવ્યો. અનેક જીવોને સત્સંગનો મહિમા સમજાવી એમને સેવાભાવી સત્સંગી બનાવીને, સાચા સમર્પિત ભક્તો તૈયાર કર્યા અને કાકાશ્રીની પ્રસન્નતા પામી.

ઇ.સ.૧૯૮૬માં કાકાશ્રીના સ્વધામગમન પછી બધાં સંત, સંતો બ્હેનો, ગૃહસ્થ ભાઈ – ભાભીઓ, કુટુંબ-પરિવારોને ન કેવળ સાચવ્યા, પણ દરેક પ્રસંગે એઓ પાસે ધૂન-ભજન કરાવી એમને ભજનીક બનાવ્યા અને એકાંતિક ધર્મના માર્ગે પ્રગતિ કરાવી.

ગુરૂજીની ગુરૂભક્તિ અને પરાભક્તિ–

ગુરૂજીની દરેક ક્રિયા, દરેક અભિયાન કાકાશ્રીની પ્રસન્નતા અને પ્રત્યક્ષની ભક્તિરૂપ હોય છે. ઇ.સ. ૧૯૮૫માં કાકાશ્રીએ જે ભૂમિપૂજન કર્યું હતું, ત્યાં અથાગ પરિશ્રમે મુશ્કેલીઓ અને માયાને ઊલ્લંઘીને ગુરૂજીએ ઇ.સ. ૧૯૯૪માં 'શ્રી અક્ષરપુરૂષોત્તમ મંદિર' સર્જી એમાં અક્ષર-પુરૂષોત્તમ, શાસ્ત્રીજી

મહારાજ, યોગીજી મહારાજ, કાકાજી મહારાજની મૂર્તિઓની પપ્પાજી મહારાજ તથા હરિપ્રસાદસ્વામિજી તેમજ પ્રગટ ગુણાતીતસ્વરૂપોના હસ્તે પ્રતિષ્ઠા કરાવી. સાથો-સાથ જ, અશોકવિહારમાં મંદિરની સામેથી પસાર થતાં મુખ્ય માર્ગનું નામ દિલ્હી-સરકાર દ્વારા **'સ્વામિનારાયણ માર્ગ'** રખાવ્યું તેમજ એને જોડતી આખી લેઈનનું નામ **'કાકાજી લેન'** રખાવડાવી કાકાજીને અમર કરી દીધા.

એ જ રીતે **કાકાજી મહારાજની 'ઇંડિયન પોસ્ટલ સ્ટૅમ્પ'** બ્હાર પડાવીને કાકાશ્રીને 'ઇંડિયન ગવર્નમેન્ટ રેકૉર્ડર્સ'માં અમર કરી દીધા. એથી ય વિશેષ મંદિરથી અડીને જ **'તીન ફરવરી પાર્ક'** બનાવી, આવા નામકરણની પહેલ કરીને ન કેવળ દિલ્હીમાં પણ સમગ્ર વિશ્વમાં, સહુનું ધ્યાન **કાકાશ્રીના સાક્ષાત્કાર દિવસ- ૩ ફેબ્રુઆરી ૧૯૫૨**ના મર્મ તરફ દોરી પોતાના ગુરૂ પ્રત્યે અદ્‌ભુત ભકિત અદા કરી છે.

ભજનિક ગુરૂજી–

પ્ર.બ્ર.સ્વ.પ.પૂ.હરિપ્રસાદસ્વામિજી ગુરૂજીને 'ભજનિક' કહે છે. એમણે દરેક કાર્યમાં- ભલે તે વ્યાવહારિક હોય કે આધ્યાત્મિક, કેવળ ભજનનું જ બળ લીધું છે. સાધુ થયા પછી પણ સાંકરદા હોય, તાડદેવ હોય કે દિલ્હી–અડધી રાતે ઊઠીને એઓ ભજન કરતા.

હાલમાં જ એમણે બધાંને રોજ સવારે ૬:૫૫ થી ૭:૧૫ સુધી જે જ્યાં હોય ત્યાં 'Fixed time Dhun' ધૂન કરવાની આજ્ઞા કરી છે અને પોતે પણ એ સમયે ધુનમાં બેસી જાય છે.

કાકાશ્રીની મૂર્તિ પધરાવવાના પ્રસંગે પણ એમણે ભજનનું જ બળ લીધું. આનંદીદીદીનું હાર્ટનું ઑપરેશન હોય, પરછાઈ દીદીનું કીડની ટ્રાંસ્પ્લાંટ જેવું મેજર ઑપરેશન હોય, ગૌરી દીદીનું કૅંસરનું ઑપરેશન હોય કે બીજાં કોઈ પણ સેવક કે હરિભક્તની ગમે તેવી કઠણ સમસ્યા હોય, બધાં પ્રસંગોમાં એમણે પોતે ભજન કર્યું અને બધાં પાસે કરાવડાવ્યું છે. ફળસ્વરૂપે બધાં કાર્ય સફળતાપૂર્વક સંપૂર્ણ થયાં અને બધાંને ભગવાનના બળે જીવતાં શીખવાડયું.

'ગુણાતીત કુટંબ'ની ભાવના અને ગુરૂજી–

૧૩મી માર્ચે સાંજે 'તીન ફરવરી પાર્ક'નું ઉદ્‌ઘાટન કરી ગુરૂજી સાથે મંદિરે પાછા વળતા'તા, તે જ વખતે ગુણાતીત જ્યોત - વિદ્યાનગરથી પૂ. જ્યોતિબ્હેનનો ફોન આવ્યો કે 'આજે આપના જન્મદિવસે અમોએ એક નવી બસ લીધી છે.' ગુરુજીએ કૉંગ્રૅચ્યુલૅશન્સ કહીને તરત કહેવડાવ્યું–'બસમાં પ્હેલું ડીઝલ ભરવાની સેવા અમે કરીશું. ટાંકીની કૅપેસીટી કેટલી છે?' તેનો જવાબ મળ્યો–'લગભગ ૫૦૦૦/- રૂ।.નું થાય છે.' ગુરૂજીએ પોતાના સેવક (જે વિદ્યાનગરમાં રહે છે) એને ફોન કર્યો અને તરત ૫૦૦૦/- રૂ।. પૂ. દેવીબ્હેનને મોકલી આપ્યા. કેવો આપોપોભાવ!

એવી જ રીતે એક વાર પપ્પાજી અને ગુણાતીત જ્યોત સાથે જોડાએલા કેટલાક ભક્તો યાત્રા કરવા દિલ્હી ગયા હતાં. એમાંથી એક ભક્તની તબિયત અચાનક બગડી અને એ ધામમાં જતાં રહ્યા. પપ્પાજીએ ગુરૂજીને કહ્યું, *'હું દિલ્હી આઉં છું.'* ત્યારે ગુરૂજીએ પપ્પાજીને સહજ જ કહ્યું: *'પપ્પાજી, આપ જરા ય ચિંતા ન કરો. હું બધું સંભાળી– કરીને, સૅટ કરીને એ દરમ્યાન પણ આપને ફોન કરતો રહીશ.'*

ગુરૂજીએ બધું મેડિકલ, લીગલ કાર્યવાહી વગેરે કરીને ભક્તની બૉડી પણ લંડન પહોંચાડવાની

વ્યવસ્થા કરી દીધી અને સાથે જે ભક્ત હતાં, એમના માટે પણ બધી વ્યવસ્થા કરી દીધી. ગુરૂજી પર અતિશય રાજી થઈ, પપ્પાજીના દિલથી આશીર્વાદ જાણે સરી પડ્યા!

સંબંધયોગ અને ગુરૂજી–

ગુરુજીના સંબંધમાં જે કોઈ આવે છે, તે ન્યાલ થઈ જાય છે. ઇ.સ.૨૦૦૨માં સુપ્રસિદ્ધ પાર્શ્વગાયક શ્રી મહેન્દ્ર કપૂરજી ગુરૂજીના યોગમાં આવ્યા. એમણે સ્ટેજ ઉપર પ.પૂ. કાકાશ્રીનું ભજન ગાયું. ગુરૂજીએ સ્ટેજ ઉપર જ એમને સ્વામિજીના હસ્તે કંઠી પહેરાવડાવી. ગુરૂજીની ભાવના એ હતી કે સ્વામિજી જેવા પરમ પવિત્ર સંત થકી એ સ્વામિનારાયણની કંઠી પહરી લે, તો એમનું અક્ષરધામ પાકું થઈ જાય.

પછી તો એમને સોનાવાલા બિલ્ડિંગ–તાડદેવના કાકાશ્રીના નિવાસસ્થાને બોલાવીને કાકાશ્રીની વિશિષ્ટ સ્મૃતિ આપી. એ સાથે જ આખા મુંબઈ મંડળને ઢોસા અને ગોળા ખવડાવીને ભક્તોની મૂર્તિ પણ લૂંટી લીધી.

ગુરૂજીને કાકાશ્રી પ્રત્યે એટલો બધો પ્રેમ હતો કે એઓ જ્યારે ય તાડદેવ આવે, ત્યારે એક પળ માટે પણ કાકાશ્રીનો લાભ લેવાનો છોડતા નહીં. જે બ્હેનો કાકાશ્રીનો લાભ લેવા આવતા'તા, એ પણ રાહ જોયા કરતા કે ક્યારે ગુરૂજી ત્યાંથી ઊઠે, તો એમને પણ કાકાશ્રીનો લાભ મળે.

અરે! જ્યારે ય ગુરૂજી દિલ્હીથી આવતા, ત્યારે ટ્રેનમાં જ સ્નાનાદિક ક્રિયા પતાવીને આવતા'તા; જેથી કાકાશ્રીનો લાભ વધારેમાં વધારે લઈ શકે.

એક વાર એઓ કાકાશ્રી માટે ન્હાવાનું સ્ટુલ લઈને આવ્યા. ત્યારે કાકાશ્રીએ હરખચંદભાઈને કહ્યુ, 'જુઓ રાજા, મારો ન્હાવાનો પાટલો આવી ગયો.' આ રીતે કાકાજીએ એમની સેવા ગ્રહણ કરી.

પ્રગટ અને પ્રત્યક્ષના પુજારી ગુરૂજી–

હાલમાં જ અ.નિ.ગોરધનભાઈ કાપડિયા (મુંબઈ)ની પૌત્રી ચિ. તેજલ એની મા સાથે દિલ્હી ગએલી. ગુરૂજીએ સેવકને કહ્યું, 'એમને મૅંગો આઈસક્રીમ ખવડાવો.' ત્યારે એણે કહેવડાવ્યું કે, 'મેં કેરી નહીં ખાવાની બાધા રાખી છે.' તરત જ ગુરૂજીએ પુછાવડાવ્યું: *'આ આજ્ઞા તમને ભરતભાઈ કે વશીભાઈએ આપી છે?'* તેજલે 'ના' પાડી. ત્યારે ગુરૂજીએ કહેવડાવ્યું: *'પ્રગટ કે પ્રત્યક્ષનો યોગ થયા પછી, એમની આજ્ઞા–એ જ આપણી બાધા!'* કેવી પ્રગટની ભાવના!

ગુરૂજી પોતાની ડાયરીમાં બધાં સત્સંગીઓના જન્મદિવસ નોંધી રાખે છે અને રોજ સવારે એમને ફોન કરીને વધામણાં પણ આપે છે. આ બાબતે મૂ.અ.મૂ. ગુણાતીતાનંદસ્વામીની વાત યાદ આવે છે–આજે તો કલ્યાણજીભાઈના દીકરાને પોતાના ખોળામાં બેસાડીને બોલ્યા કે 'એમનું સામર્થ્ય તો અવતાર કરતાં પણ અધિક છે.' એવી મહિમાવાળી દૃષ્ટિએ પ્રગટના ભક્તોને ગુરૂજી નિહાળે છે.

છેલ્લા ચાર-પાંચ વરસથી ગુરૂજીના પ્રાગટ્યોત્સવે પ.પૂ. સાહેબ આવે છે. ત્યારે ગુરૂજી એમને જુદા-જુદા વાઘા પહેરાવે છે. જેમ કે કાકાશ્રીના ધોતિયું-કફની, 'સ્વામિનારાયણ મંત્ર' પ્રિન્ટ કરેલું શર્ટ! આમાં ગુરૂજીની એ જ ભાવના દેખાય કે સાહેબ જેવા ગુણાતીત સ્વરૂપને પણ ઠાકોરજીની જેમ કેમ ડ્રેસઅપ ન કરીએ?

જય સ્વામિનારાયણ! — *પૂ. વશીભાઈ (પવઈ)*

13 मार्च 2009 — प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन

प.भ. कपूर साहब (दिल्ली)

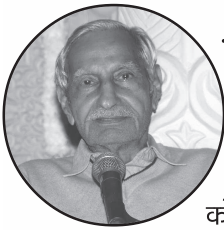

...आज एन्टायर एरिया खुश-खुशहाल नज़र आ रहा है। **जहाँ बदबू थी, वहाँ गुरुजी ने खुशबू कर दी।** 'सॅल्फ प्रेईज इज़ नो रॅकमन्डॅशन' – पर कई दफा भगवान किसी के मुँह से बुलवा देते हैं। पार्क को डॅवलप करने की शुरुआत में मैंने गुरुजी को कहा था कि इट विल बी 'ए साईट सीईंग' ऑफ दिल्ली। इसका नाम इतना मशहूर होगा कि कोई जब पूछेगा कि अशोकविहार किधर है? तो लोग कहेंगे कि **'तीन फरवरी पार्क'** पूछ रहे हो? जहाँ से भी पूछोगे तुम्हें **'तीन फरवरी पार्क'** का पता लग जाएगा। मैं तो यह कहता हूँ कि **इसके सामने के मकानों की कीमत बढ़ गई है; क्योंकि जहाँ बदबू थी वहाँ भगवान ने खुशबू कर दी।**

...काकाजी के तो इतने प्रसंग हैं कि जितने कहें उतने थोड़े हैं। वे कहते थे कि अगर मैं चाहूं तो मेरठ तक की लाईन लग जाए, लेकिन फिर तुम मेरा लाभ नहीं ले सकोगे। वे इतना भजन करते और कराते कि यहाँ से लुधियाना तक कार में बैठे हुए कन्टीन्यूअस भजन करते जाते।

मेरा एक पर्सनल अनुभव है। हमें सब्जी मण्डी रेलवे स्टेशन के सामने एक जमीन मिली थी। सौ रुपया में भी वो बिकती नहीं थी। काकाजी ऐसे ही हमारे घर खड़े थे, तो मैंने काकाजी को कहा – काकाजी, 'कम्पॅनसेशन ऑफ पाकिस्तान लॅन्ड' के रूप में एक जमीन हमें मिली है; पर सौ रुपए में भी ये बिकती नहीं है। सन् 1984 की यह बात है। काकाजी बोले – 10 फरवरी 1985 को बिकेगी और नौ सौ से ऊपर जाएगी। ये गप्पे मारने की बात नहीं थी। **संत के मुँह से निकली बात भगवान को सच करनी ही पड़ती है।** उस लॅन्ड में दिल्ली का मोस्ट प्रॉमीनन्ट मॅन रघुवीर सिंह भी पार्टनर थे। 10 फरवरी 1985 को ही जमीन बिक गई और... हम दोनों बैठे हुए थे, तो रघुवीर सिंह ने मुझे कहा – यार, तुमने तो मुझे एक साल पहले यह बताया था कि हमारे गुरुजी ने कहा है कि 10 फरवरी को यह बिकेगी और रेट नौ सौ से ऊपर जायेगा और... साढ़े तेरह सौ रेट में वह जमीन बिकी। **वो थे काकाजी!**

कई दफा मेरे दिल में भी आता है और आज सच बोलता हूँ कि मैंने पंडित नेहरू को भी देखा, महात्मा गांधी को भी देखा। पचास आदमी उनकी तारीफ करते थे, तो बाकी क्रीटीसिज़्म भी करते थे। पर, **मेरी एन्टायर लाईफ में एक प.पू. दीदी और एक लालबहादुर शास्त्री ये दो ही ऐसे देखे कि ऑल आर इन फेवर!** दीदी की कितनी भी तबियत खराब हो, शी इज़ ऑलवेज़ इन हॅप्पी मूड। वो हर एक को मिलेंगी और हर एक को आशीर्वाद देंगी कि भगवान तेरा काम जरूर करेगा; भजन करो – भजन करो! जय स्वामिनारायण!

पू. लांबा साहब (दिल्ली)

...मैं इस मंदिर के सामने से लगभग बीस साल से निकलता था, पर गुरुजी के टच में पिछले दो साल से आया हूँ। मुझे मेरे साढूभाई **राजेशजी** और **अंजू** ने प्रोत्साहित किया कि आप गुरुजी के दर्शन अवश्य कीजिए। मैं गुरुजी की शरण में आया और आने के बाद मुझे ऐसा हुआ कि मैंने अपने अठारह साल क्यों खराब

कर दिए ? बीस साल पहले क्यों नहीं मिला ? पर एक अचरज यह हुआ कि जो अठारह साल मेरे खराब हुए, वो गुरुजी और दीदी ने अपने आशीर्वाद और प्यार से कवरअप करा दिए। मुझे आज के दिन यह एहसास ही नहीं होता कि मेरे वो अठारह साल गुरुजी या दीदी के वगैर रहे हों। दीदी ने मुझे और मेरी पत्नी मंजू–हम दोनों को इतना साहस-प्यार दिया, जो एक माँ अपने बच्चे को देती है। सो, **मुझे दीदी में एक माँ का रूप दिखाई देता है।**

पीछे मेरी जिन्दगी में एक हादसा हुआ। उस हादसे से उबारने में गुरुजी और दीदी का जो हाथ है, वो शायद किसी का भी नहीं होगा। यहाँ उपस्थित सभी हरिभक्तों ने मुझे बहुत साथ दिया। जैसे ही मेरे साथ वो हादसा हुआ, गुरुजी की कृपा से दीदी अगले दिन ही मेरे निवास स्थान पर आईं और जैसे ही उन्होंने अपने चरणकमल मेरे निवास स्थान पर रखे, मेरे घर का सारा का सारा माहौल ही बदल गया। जिस गम में हम लोग घिरे थे, उस गम में से बहुत जल्दी बाहर निकल आए। इसके बाद गुरुजी ने मेरे घर पर अपने चरण रखे और महापूजा हुई। तब से शायद ही मेरे घर में कोई कमी रह गई हो। गुरुजी मुझे एस्योरन्स भी देकर गए कि लांबा साहब, अब आप खुशियों की तरफ बढ़ेंगे...

जहाँ तक मुझे पता चला है– पच्चीस साल की उम्र में गुरुजी ने ये संन्यास धारण किया था और दीक्षा ली थी। पच्चीस साल एक जवानी का रूप होता है, जब आदमी इधर-उधर भटकता है। ये शख्सियत ऐसी थी जिन्होंने जन कल्याण और हरिभक्तों की भलाई के लिए अपना जीवन अर्पण करने की उस दिन से पूरी चेष्टा करी है और सक्सेसफूल हुए।

काकाजी के बारे में अभी इतना ज्ञान प्राप्त नहीं किया, पर मुझे आज एक विश्वास होता है कि आज से चालीस साल पहले काकाजी ने गुरुजी में जो निष्ठा और विश्वास देखा था, उसको गुरुजी ने पूरी तरह निभाया। काकाजी की दूरदृष्टि है कि उन्होंने गुरुजी के रूप में एक ऐसे संत ढूंढे और दिल्ली के लिए उनको प्रस्थान कराया– जो जाकर दिल्लीवासियों का कल्याण करें। तब से गुरुजी हम सब हरिभक्तों का बहुत ध्यान रखते हैं। मैंने कई बार देखा कि कोई तीन बजे आ रहा है, कोई चार बजे आ रहा है, कोई सुबह पाँच बजे आ रहा है, कोई छः बजे आ रहा है... मेरे ख्याल से गुरुजी ने आज तक किसी को मिलने के लिए मना नहीं किया। **ऐसे संतों की आज इस दुनिया में बहुत जरुरत है।**

मैं काफी टाईम से एक ऐसे ही संत और गुरु की तलाश में था। मेरे साढूभाई ने मुझे वो रास्ता दिखाया और आज मुझे गुरुजी के चरणों में लाकर बिठाया। मैं हर तरफ से पूरी तरह संतुष्ट हो रहा हूँ।

मुझे जब भी कोई तकलीफ महसूस होती है, तो मैं सिर्फ गुरुजी के सामने आकर बैठता हूँ। उनके चेहरे को देखता हूँ, तो मेरे सारे के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। मुझे न तो गुरुजी से कुछ पूछना पड़ता है और न ही गुरुजी को बताना पड़ता है। गुरुजी नज़रभर मुझे स्माईल दे देते हैं और मेरे दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं। ***ये एक सच्चे संत की फ़ितरत होती है।***

मैंने तो छोटे से टाईम में गुरुजी-दीदी को जो देखा वो आपके सामने रख दिया। अब सबसे आख़िर में हमारे वेद में शतायु का जो एक मंत्र है, उसके द्वारा गुरुजी और दीदी की शतायु के लिए प्रार्थना करता हूँ...

प.भ. नरेन्द्रजी (जगरांव)

आज का दिन पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल स्थित गुणातीत समाज के लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिन है। आज दो ऐसे इन्स्टन्सीस – दो ऐसी बातें हुई हैं, जिनमें 'भक्ति' के साथ 'शक्ति' भी है। 'भक्ति' – गुरुभक्ति, 'शक्ति' – आध्यात्मिक शक्ति! जैसे अभी कहा गया कि **बदबू, खुशबू में बदल गई।** बेशक, हम कह रहे हैं **'तीन फरवरी पार्क'**; ठीक है पार्क का नाम है। लेकिन **'तीन फरवरी'** का दिनाँक काकाजी महाराज से जुड़ा हुआ है। आज इस पार्क की धरती गुणातीत समाज के अनुयायियों – गुणातीत समाज के हरिभक्तों को कह रही है – चाहे **मैं बदबू फैला रही थी, तब भी मेरा इतना कल्याण हो सकता है, तो आपका कल्याण क्यों नहीं होगा? काकाजी का तो नाम ही बहुत है, तो उनके काम का तो कहना ही क्या?**

आज गुरुजी का बर्थडे – 72nd प्राकट्य दिन! 7 + 2 = **9.** जो **9** की फिगर है, वो न्यूमरोलॉजी में एलॉट नहीं करी गई। क्योंकि वो **गॉड की फिगर है।** कैसे? मैं आपको बताता हूँ।

9 x 1 = **9**.

9 x 2 = 18; 1 + 8 = **9.**

9 x 3 = 27; 2 + 7 = **9.**

9 x 4 = 36; 3 + 6 = **9.**

9 x 5 = 45; 4 + 5 = **9.**

यूँ जो नाईन है, वो अपना रूप नहीं बदलता। वह किसी एट्रेक्शन में नहीं आता; उस पर किसी फोर्स का कुछ असर नहीं होता। यह तो एक सांकेतिक बात है, दुनियावी ढंग से समझाने की बात है। गुरुजी की शक्ति तो आप सभी को पता ही है। काकाजी की शक्ति भी आप सभी को पता ही है। तो मैं बता रहा था कि अब हम कितनी ऊँचाई पर पहुँच गए हैं, वो ये फिगर बता रही है। **72 यानि 7+2 = 9, यानि गुरुजी = हमारे लिए गॉड!** क्योंकि काकाजी इनमें विराजमान हैं और वे कॉन्सटन्टली लाईट दे रहे हैं, कॉन्सटन्टली हमारा काम कर रहे हैं।

इस बार 7 मार्च को हुई परिक्रमा के बाद जगरांव लौटने जा रहा था। पर, मन दुविधा में था कि अभी होली पर भी यहाँ रहूँ और फिर ये तेरह तारीख का फंक्शन भी एटेन्ड करूँ। मैं बैग लेकर जाने की तैयारी कर रहा था कि पानीपत वाले हरिभक्त बोले – *शर्माजी जा रहे हो क्या?*

मैंने कहा – *जाने का मन तो नहीं करता।*

वे बोले – *कभी-कभी मन की बात भी मान लिया करो।*

बहुत अच्छी - रहस्यमयी बात कही। अधरवाईज़ कहा तो यह जाता है कि मन की बात मत मानो। लेकिन जब मन में अच्छी बात आए, तो उसको मान ही लेना चाहिए। मैंने बस में आठ घंटे ट्रावल किया, तब तक मेरे मन में यह बात घूमती रही। घर में बैठा रहा, तो भी यह बात घूमती रही और मैं चैन नहीं ले सका। सो, मैंने डिसाईड कर लिया कि अगर मुझे रिजर्वेशन मिल गई, तो मैं तेरह तारीख को जरूर जाऊँगा। यूँ इसी के तहत मेरे मन में यह प्रेरणा हुई और मैं फिर यहाँ आ गया।

जहाँ तक परिक्रमा की बात है, तो आप सभी को यह अनुभव हुआ होगा, जो मुझे भी हुआ। **ये परिक्रमा, साधारण परिक्रमा नहीं थी।** इसमें काकाजी की पारमेश्वरी शक्ति हमारे साथ बिल्कुल जुड़ गई थी। इसलिए मैं घूमता रहा, परिक्रमा करता रहा। यहाँ जो गुजराती में भजन बज रहे थे, उनका भाव तो नहीं पता चलता था; लेकिन उनकी वाइब्रेशन्स हमें अपने आप उससे जोड़ देती थी। भजन तो बहुत गाए जाते हैं। *'मेरी रंग दे चुनरिया, हरी न रंगाऊं मैं पीली न रंगाऊं, अपने ही रंग में रंग दे चुनरिया'* – ये तो आदमी सुनता है, थोड़ी देर प्रभावित होता है और बात ख़त्म हो जाती है। लेकिन यहाँ जो बज रहा था, वो तो अपने अंदर समा गया। ऐसा लगता था कि उसी 'शक्ति' के साथ हम परिक्रमा में घूम रहे हैं। गुरुजी ने फिर मुझे बताया भी कि अपने यहाँ जो कुछ भी है, वह सारा **'लीविंग'** है, सब कुछ **'शाश्वत्'** है, सब कुछ **'सत्य'** है। सो, उसमें यह 'शक्ति' होगी ही।

परिक्रमा करते हुए मुझे याद आया कि एक समय था जब काकाजी महाराज ने सारे जगरांव की गलियों में पैदल चल कर **'प्रभात फेरी'** की थी। उस समय भी हम साथ थे। ये बात अब जब रिपीट हुई, तो मन एकदम भावुक हो उठा और बहुत ही अच्छा लगा... साथ ही जब यह पता लगा कि ये **परिक्रमा का उत्सव अब हम प्रत्येक वर्ष मनाया करेंगे**, तो ये हमारे गुणातीत समाज के लिए बहुत ही परोपकारी होगा।

गुरुजी की छत्रछाया में अध्यात्म की ओर हम निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। काकाजी जहाँ हमें ले जाना चाहते थे, वहाँ हम तो अकेले जा नहीं सकते थे। हमारी तो कोई क्षमता ही नहीं है। लेकिन, जैसे किसी बच्चे को एक छोटी-सी नाली देखकर भी ऐसा हो जाता है कि कैसे पार करूँ? तो उसके साथ जो बड़ा होता है, वह उंगली पकड़कर पार करा देता है; पर, गुरुजी तो हम पर इतने मेहरबान हैं कि हमें इस भवसागर से पार करा रहे हैं और हमें निरंतर 'भक्ति' और 'शक्ति' दे रहे हैं। गुरुजी की अपने गुरु काकाजी के प्रति भक्ति का कोई मोल ही नहीं है। अभी किसी ने बात की थी कि जब हम गुरुजी के पास बैठते हैं, उनके सामने देखते हैं, तो हमारे सारे रोग-कष्ट दूर हो जाते हैं। आकाश में सितारों को तो ढूंढना पड़ता है। आपको मानो 'ध्रुव' तारा देखना है, तो वो आपको ढूँढना पड़ेगा। पर, चाँद और सूरज को कभी ढूंढना नहीं पड़ता। गुरुजी और काकाजी 'चाँद' और 'सूरज' हैं। अपने सर पर हाथ रख लो, फिर भी धूप आएगी, यूँ चाँदनी भी आयेगी। ये तो मामूली बात है; जो हम कहते हैं कि ये तो रोशनी ही देंगे। ये सितारे थोड़े ही हैं? ये तो ब्रह्मांड के चाँद और सूरज हैं, जो हमें लगातार शीतलता भी प्रदान करते हैं और प्रकाश भी प्रदान करते हैं। जीवन के लिए ये दोनों चीजें अति आवश्यक हैं। प्रकाश और शीतलता से हमारी भक्ति फलती-फूलती है।

आज पंजाब, हरियाणा, दिल्ली – सबकी ओर से मैं गुरुजी के प्रागट्य दिवस पर 'हॅपी बर्थडे' कहता हूँ। जब **'तीन फरवरी पार्क'** का उद्घाटन हो रहा था; मैं पंजाबी हूँ और पंजाबी जब तक शोर न कर लें – अच्छा नहीं लगता – तो मेरे मन में थोड़ा ऐसा था कि मैं 'काकाजी महाराज की जय' का उद्घोष करूँ...

काकाजी हमें क्षमता प्रदान करते रहें कि इसी तरह इस मंदिर से-इस संत से जुड़े रहें। गुरुजी की सेवा करते रहें और वे जो कुछ कहते हैं, उसे अच्छी तरह समझते रहें। हमारी बुद्धि अभी इतनी डॅवलप नहीं हुई, सो ऐसी 'निर्दोषबुद्धि' हो जाए इसके लिए मैं प्रार्थना करता हूँ; क्योंकि इन्हीं के करने से सब कुछ हो सकता है...

प.भ. के.के. अग्रवालजी (दिल्ली)

आज गुरुजी का ओरिजीनल बर्थ-डॅ है। वैसे तो गुरुजी का बर्थ-डॅ हम सारे मार्च ही मनाते रहते हैं। कभी तिथि के हिसाब से, कभी मनाने के हिसाब से; पर 13 मार्च ओरिजनल बर्थ-डॅ है। अभी हमारे किसी हरिभक्त ने बोला कि गुरुजी का बहत्तरवा बर्थ-डॅ है। मेरा ओपीनीयन इससे थोड़ा डिफरन्ट है। हमने कभी कृष्ण भगवान के जन्मदिन का ईयर लिखा है कि पांच हजारवां या दस हजारवां या दो हजारवां या भगवान राम को इतने साल हो गए – ऐसा हम कभी ध्यान देते हैं क्या? सो इट इज़ ओन्ली थर्टीन्थ मार्च; नो सेवनटी, नो सेवनटी-वन, नो सेवनटी-टु। सो, वी आर सॅलीब्रेगिंटगी ओन्ली थर्टीन्थ मार्च। जैसे रामनवमी – जन्माष्टमी है, ऐसे हमारे लिए गुरुजी का जन्मदिन है। हम तो इयर्स याद ही नहीं रखना चाहते। मुझे तो 1 मार्च को देखकर बस ये ख्याल आता है कि मार्च आया, तो गुरुजी का बर्थ-डॅ आया।

...एक चीज तो हन्ड्रेड पर्सेन्ट है कि गुरुजी के साथ में रहकर आपका कभी अहित नहीं हो सकता। कुछ भी मन में विचार आ जाए, कभी भी आप डिप्रेशन में हों या कभी भी आप परेशानी में हों, पर यहाँ एक सार्वभौम सत्ता-ब्राह्मीशक्ति है जो हमारा कभी अहित नहीं होने देगी। यह मेरा एक विश्वास है और मैंने कई बार आजमाया भी है। जब कभी भी मैं डिप्रेशन में होता हूँ या मुझे परेशानी होती है, तो ये चीज ध्यान में आती है – **'हम काकाजी से जुड़े हुए हैं; काकाजी को हमने अपनी बागडोर सौंप रखी है – गुरुजी को हमने अपनी बागडोर सौंप रखी है, गुरुजी ने हमारा इंस्यॉरन्स करा रखा है।'** और... मन में जो डिप्रेशन, भावना और उथल-पुथल होती है, वह इस सोच से न्यूट्रलाईज हो जाती है।

...एक भजन में है – ***'पारसमणि गुरुजी रूप मिली'***; तो जहां भी **उन्होंने** टच कर दिया – जैसे आज सभी ने बोला कि **पार्क की तरफ उन्होंने देखा, तो पार्क का उद्धार हो गया। सो, हम यहाँ जितने बैठे हैं, इन सब का यानि हमारा उद्धार तो निश्चित है ही।** निश्चिंतता इसी वजह से है कि आज हम गुरुजी के साथ में हैं।

साथ में, हम ये चाहते हैं कि हम हमेशा उनके साथ में रहें और गुरुजी हमारे साथ में रहें – दीदी हमारे साथ रहें। किसी भी तरीके से हम सोचें ही नहीं कि गुरुजी हम से दूर हैं और कभी भी मन में यह विचार न लाएं – ऐसे आशीर्वाद गुरुजी अपने जन्मदिन पर दें और ऐसी 'निष्ठा' रखने की शक्ति दें। हमारे अंदर जो कमियाँ हैं, उन्हें अपने तरीके से शॅप दें – जैसी आपने पार्क को शॅप दी है। आज धीस इज़ 'धी टॉक ऑफ धी टाउन'! हर आदमी यही बात कर रहा था कि यहाँ क्या था और गुरुजी ने उसे क्या बना दिया! आफ्टर टॅन ईयर्स, नो बॉडी वील बीलीव कि यहाँ पर इस तरीके की कभी कोई जगह रही होगी। यहाँ लोग विजिट करने आएंगे और इसके साथ हमारे मंदिर को भी विज़िट करेंगे।

तो, आज **हमें भी गुरुजी उसी तरीके से शॅप दें कि हम एक-एक यहाँ पर जितने भी हरिभक्त हैं, वे एक-एक काकाजी की पहचान बनें...**

प.पू. वशीभाई (पवई)

वॉट ए वे टु सेलीब्रेट धी बर्थडे? बर्थडे मनाया जाए और अपनी गुरुभक्ति अदा करें... थर्टीन्थ मार्च को **'तीन फरवरी पार्क'** का उद्घाटन करना, वो एक बड़ा **'युगकार्य'** हो गया। युगकार्य किस तरह से? तो, तीन तरह से–

एक तो –दिल्ली वालों को क्या फायदा हुआ? अशोकविहार में तो जैसे बताया कि बदबू से खुशबू में बदल गया। कमर्शियली देखो तो आजू-बाजू के मकानों के भाव बढ़ जाएंगे। दरअसल संत को पहचानने की दृष्टि चाहिए। हमें क्या लगता है कि संत लेता है; एक्चुअली, संत देता है। कईयों को लगा कि इतनी बड़ी जमीन मंदिर वालों ने ले ली।
पर, भई! मंदिर वालों ने तो गटर साफ कर दी।

दूसरा – संस्कार का फायदा : आस-पास रहते लोगों के बच्चे ऐरी-गेरी जगह पर जाते होंगे, पर यहाँ पवित्र संस्कारों की वाइब्रेशन्स बच्चों को टच करेंगी और उनको संस्कार मिलेंगे...
और

तीसरा – स्पीरीच्युअल संस्कार मिलेंगे... गुरुजी, संतों, दीदी और हरिभक्तों का योग मिल जायेगा। उनकी जिंदगी संभल जायेगी। एक जिंदगी संभल जाए, तो एक ब्रह्माण्ड उबारने जितना फल मिलता है। यूँ, एक भक्त यहाँ जुड़ेगा, तो कितना बड़ा पुण्य का काम होगा?

गुणातीत समाज के लिए भी इतनी अहम् बात हो गई–इतनी बड़ी बात हो गई कि **काकाजी महाराज–जिन्होंने गुणातीत समाज की नींव की ईंट रखी, उन्हें गुरुजी ने 'अमर' कर दिया। 'तीन फरवरी पार्क' के नाम से** गुणातीत समाज के सर्जक के रूप में केवल **एक सेन्टेन्स में आन्सर मिल जाएगा कि गुणातीत समाज के सर्जक काकाजी और पप्पाजी हैं।** इसलिए गुरुजी ने काकाजी और पप्पाजी–दोनों के सिम्बोल रखे हैं। यूँ, गुरुजी ने गुणातीत समाज के लिए जबरदस्त मॅसेज–थॉट प्रॉवोकिंग घटना रच दी कि हम कभी इन दोनों को भूलें नहीं। यूँ, तीन फरवरी पार्क के रूप में **गुरुजी ने कुछ बोले बिना, बिना किसी शो-शा, शांति से विधाउट एनी ह्यू एण्ड क्राई एक मैसेज छोड़ दिया कि गुणातीत समाज काकाजी के बिना हो ही नहीं सकता।** ऐसी बातों के लिए लोग इतिहास लिखते हैं, पुस्तक लिखते हैं; पर, **गुरुजी ने ये नए रूप में लिख दिया कि काकाजी यहाँ अमर हैं।** तो ये गुणातीत समाज के लिए भी बात हुई।
और...

मानवजाति के लिए–

धन्यवाद हो! शास्त्रीजी महाराज को, योगीजी महाराज को जिन्होंने अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी की पहचान करवा कर हमें सनाथ बनाया और धन्यवाद हो! काकाजी को कि ऐसे प्रगट स्वरूप को तत्त्व से पहचान कर उन्हें मानने की बात समझाई। भगवान तो सबको मिले थे; जैसे के.के. अग्रवालजी ने कहा–कृष्ण जन्म किसने मनाया होगा? राम जन्म भी तो राम की हाजिरी में नहीं मनाया होगा। स्पीरीच्युआलीटी में काकाजी ने हमें इतना फोर्स दिया और इतनी आगे की बात करी कि हम आज गुरुजी का बर्थ-डॅ इस कदर मनाते हैं। तो

काकाजी ने जो प्रगट की बात करी, वो भी इसमें छुपी हुई है। कैसे? बताता हूँ।
कभी कोई पूछेगा कि–'तीन फरवरी' का क्या मतलब?
मतलब–'साक्षात्कार'।
साक्षात्कार मिन्स क्या?
मतलब–काकाजी को जो दर्शन हुआ कि अक्षरधाम में जो महाराज हैं, वो ही योगीजी महाराज के रूप में साक्षात् विराजमान हैं। उनमें और योगीजी महाराज में कोई फर्क नहीं।
तो ये बात एक लाईन में पूरे ब्रह्माण्ड को गुरुजी ने दे दी है कि 'प्रगट' की बात करो। थोड़ी गहराई में और जाएं, तो काकाजी को साक्षात्कार तो हुआ फिर भी काकाजी ने क्या किया? तो, **'आई एम नथ्थींग; जीरो बन के जीओ।'** यूँ, योगीजी महाराज का करण–उनका हाथ बन कर वे रहे।

एक बार शहीद हो जाना आसान है, लेकिन पल-पल मरना, पल-पल शहीद होना बहुत मुश्किल बात है। साधु का जीवन ऐसा होता है और ये बात गुरुजी ने कितनी सहजता से समाज के सामने रख दी! इसीलिए बोलता हूँ कि **यह एक 'युगकार्य' हुआ है।** आज किसी को मालूम नहीं है कि यह क्या हुआ है? लेकिन आज से सालों बाद इट विल ब्लो लाईक वॉल्कॅनो। यहाँ जो साक्षात्कार की–प्रत्यक्ष की बात है, वो दीपक से दीपक प्रगटाने जैसी बात है। सब भाइयों ने माँगा भी ऐसा ही कि–हम भी ऐसे तैयार हो जाएं कि हम गुरुजी के करण बन जाएं और काकाजी की पहचान बन जाएं। फिर से, गुरुजी को करोड़ों-करोड़ों धन्यवाद कि अपने जन्म दिन के ऊपर ये 'तीन फरवरी पार्क' का उद्‌घाटन रख दिया। **जब भी कोई बड़ी बात होती है या बड़ा कार्य होता है, तब वह पता नहीं चलता; परंतु सालों निकल जाते हैं, तब पता चलता है।**

गुरुजी ने आज यहाँ **गंगा** प्रगटा दी। कैसे? जब गंगा प्रगटी, तब 'गंगोत्री' को कोई नहीं जानता होगा। अब हम 'गंगोत्री' को एक यात्रा का स्थल मान कर वहाँ जाते हैं। लेकिन आज से सालों पहले कौन जाता होगा? क्या किसी को मालूम भी होगा कि यह नदी जो बहती है, वह कलकत्ता जाकर विशाल जल प्रवाह रूप **'गंगा सागर'** में बदल जाएगी? ऐसे ही, **आज जो घटना घटी है, उसकी ग्रॅवीटी अभी मालूम नहीं पड़ती।**

...स्वामिनारायण भगवान एक बार राजकोट आए थे। उस समय के पोलिटिकल एजेन्ट 'सर मालकम' से उनकी मुलाकात कराने का पक्का किया। तो राजकोट में अभी जहाँ मंदिर है, वहाँ पहले बंजर जगह थी। वहाँ अपने सभी हरिभक्तों-संतों ने मिलकर सारी जगह साफ करके टेन्ट, रावटी लगा करके मीटिंग एरेन्ज करी। महाराज ने दादाखाचर को बोला सर मालकम को एक घोड़ा भेंट दो। वो बोले मुझे घोड़ा नहीं चाहिए, मुझे अपना आशीर्वाद दो। तो जो **'शिक्षापत्री'** अभी भी लंडन की ऑक्सफर्ड लाइब्रेरी में है, वो महाराज ने दी। तो, जो इटर्नल काम हुआ, वो परमॅनन्ट हुआ और उसी जगह पर आज मंदिर बन गया। ऐसे ही **A**-103 में जब गुरुजी रहने आए, तो किसी को मालूम नहीं था। पर, गुरुजी ने काकाजी के पास जो-जो संकल्प किए, वे काकाजी ने पूरे किए। भारतमाता मंदिर में किया संकल्प आज साक्षात् है ही। **गुरुजी हमें ये सिखाते हैं कि तुम जिसको मानते हो, उसे हन्ड्रेड परसेन्ट मानो।** गुरुजी ने काकाजी का माना, तो उन्होंने गुरुजी को कहां से कहां रख दिया! गुरुजी ने काकाजी को याद रखते हुए एक के बाद एक स्टेप–जैसे स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी लेन, अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर, काकाजी और पप्पाजी की मूर्ति और... 'अक्षरज्योति'! उसके

लिए भी उनकी क्या भावना थी कि काकाजी ने बहनों के भगवान भजने का मार्ग नया चालू किया, इस मार्ग पर बहनें अच्छी तरह से चलें इसके लिए 'अक्षरज्योति' का निर्माण करा। और... अब 'तीन फरवरी पार्क'!

'तीन फरवरी पार्क' का निर्माण करने में बाधाएं तो बहुत आती होंगी। **जब भी कोई अच्छा काम लेकर बैठो, तो विरोध होता ही है।** जैसे पुरी साहेब बता रहे थे कि कई लोग देखते कि शाम को तो यहाँ कुछ था नहीं, तो रातोंरात यह कैसे हो जाता है? एक बार शाम को किसी ने देखा तो कुछ नहीं था, सुबह को आया तो 25-30 ट्रक मिट्टी आकर इधर पड़ी थी; वो चौकन्ना हो गया! इसका मतलब भगवान करते हैं।

गुणातीतानंदस्वामी के समय की बात है। महाराज की आज्ञा से स्वामी मंदिर बना रहे थे; नागर ब्राह्मणों का बहुत विरोध था। मंदिर की नींव में बड़े-बड़े पत्थर डालने थे। तो ब्राह्मणों ने राज दरबार में शिकायत की कि सरकार के पत्थर मंदिर वालों ने ले लिए। राजा ने हुक्म दिया कि अभी के अभी पत्थर वापिस करने पड़ेंगे। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा भगवान स्वामिनारायण को याद करो। महाराज को याद किया-धुन करी, तो बहुत बारिश हुई और बारिश से सब बड़े-बड़े पत्थर धड़, धड़, धड़ जहाँ चाहिए थे वहाँ ढेर हो गए। ऐसे ही यहाँ देखो, कितने कम समय में इतना पार्क डॅवलप हो गया! पार्क तो अनिल अम्बानी, मुकेश अम्बानी जैसों को बोल दो, तो खूब बना देगा। बट **लाईव एन्ड लीविंग पार्क**– विधाउट मनी! मुझे तो चिंता होती है कि गुरुजी आप ये फाइनन्स कैसे करोगे? विधाउट एनीथिंग ये सब मॅनेज करना, वह भगवान का काम है। **गुरुजी के बहुत फीचर्स हैं, लेकिन ये एक आउटस्टॅन्डिंग फीचर है।** मुझे के.के. अग्रवाल की बात बहुत अच्छी लगी कि हम 'सवन्टी टू' निकाल दें; क्योंकि महापुरुष इज़ इटरनल। धॅ जस्ट ट्रावेल ऑन धिस अर्थ। हम तो बहुत भाग्यशाली हैं कि हम उनके जोग में आ गए हैं– हम काकाजी के जोग में आ गए। इधर भी बहुत विघ्न आए, लेकिन भगवान का काम भगवान करते हैं।

काकाजी ने दिल्ली का काम आउटराईट किया, जैसे जूनागढ़ का काम महाराज ने आउटराईट 'विटो' पावर इस्तेमाल करके किया। क्यों किया? **क्योंकि गुरुजी ऐसे पात्र बने।** कोई भी काम पात्र के बिना नहीं बनता और... **धन्यवाद आप सब भक्तों को, जो गुरुजी का इतना ख्याल रखते हो।** एक भाई ने बहुत अच्छी बात बताई– प्रार्थना करना कि दीदी और सब बहनों की तबियत अच्छी रहे। हमारे सुहृद्स्वामी को भी बहुत भीड़ा है। कल देखा तो कितनी बड़ी कढ़ाई भर के दूध को हिलाते थे; जिसे हिलाते-हिलाते हाथ दर्द करने लग जाता है। लेकिन गुरुजी की ऐसी भावना कि ठंड में लोगों को सर्दी नहीं हो जाए, तो गरम दूध पिएं। **छोटी-छोटी बातों में भगवान और भक्तों के प्रति ये भाव होना, सचमुच पृथ्वी पर यही 'अक्षरधाम' है।** हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि हम सब ऐसे जोग में आए हैं। मल्कानी साहब भी दिन-रात गुरुजी के पीछे रहकर गुरुजी को खूब-खूब सपोर्ट करते रहते हैं। सब हरिभक्त– दालिया साहेब, वच्छराजजी, पुराने-नए सब। किसका नाम लें और किसका नाम नहीं लें? **आज सचमुच गुरुजी का बर्थ-डॅ नहीं है, जो बैठे हैं उन सबका बर्थ-डॅ है।** मानो– सबके दिल में ऐसी खुशी होती है कि ये हमारा बर्थ-डॅ है। लांबाजी ने वेद की ऋचा भी अच्छी बोली– **'शतायु जीव शरदः।'** पर, के.के. अग्रवालजी ने तो कह दिया कि 'शतं नहीं, इटरनल'। तो हम ऐसी इटरनिटी में जिएं और दीदी की भी तबियत अच्छी रहे। **अभी मालूम नहीं, काकाजी गुरुजी द्वारा इससे भी आगे और अच्छा क्या-क्या काम करवाएंगे। और अच्छे-अच्छे काम होते रहें और हमारा दिल्ली का मंडल जैसे काकाजी ने बताया था, वैसे 'अनोखा' रहे– यही भावना...**

पू. मल्कानी अंकल

...मैं अपने दिल से क्या सोचता हूँ कि **इवन अमंग ऑल धी साधुज़, गुरुजी इज़ ए यूनिक साधु।** सब चीजें नज़र में भी रखते हैं, **जो सारे नियम हैं, वो भी नज़र में रखते हैं; मगर फिर भी उनकी एप्रोच अलग हट के-यूनिक है,** विच टचीज़ एवरीबॉडी। हरेक को ऐसा होता है कि गुरुजी हमारे हैं। धेर इज़ नॉट ए पर्सन हियर, हु डज़ नॉट फ़ील कि गुरुजी मेरे ही हैं। और किसी के लिए हैं, तो ठीक है; मगर हमारे तो जरूर हैं, ऐसी फीलिंग होती है। **हिज़ लव फॉर धी सत्संग, इज़ सो ट्रीमन्डस।** इट्स डिवाईन, टोटली डिवाईन। **मैंने देखा हुआ है कई टाईम बहुत बिज़ी होते हैं, मगर फिर भी कोई आए, तो गुरुजी का फर्स्ट एप्रोच इज़ टु गिव सोलेस हू एवर हेज़ कम। जो भी आता है, उनको ठंडक देने की उनकी पूरी कोशिश रहती है।** मैं खुद सुबह गुरुजी को टेलीफोन करता हूँ; ये नहीं कि गुरुजी खुश हो जाएं, पर कम से कम मुझे आनंद आए। क्योंकि सारा दिन चलता है, कभी बात होती है-कभी नहीं होती है। मगर सुबह एक 'जय स्वामिनारायण' हो जाता है, तो कम से कम मन में एक आनंद और शांति होती है कि गुरुजी का दर्शन हो गया। एवरी थिंग विल बी वॅल।

गुरुजी हॅज़ बीन कल्टीवेटिंग धीस सत्संग। मैंने देखा है, पहले बहुत कम फेमिलीज़ थी। अभी इतनी फेमिलीज़ हैं और **एक होता है–समाज को कैसे भी इकट्ठा कर लेना। गुरुजी हॅज़ नॉट डन धॅट। गुरुजी हैज़ क्रियेटेट ए बॉन्ड, एक यूनिक बॉन्ड। मैं बहुत सत्संग में और जगह भी जाता हूँ ,** मैं किसी से कोई कम्पेरिज़न नहीं कर रहा हूँ; हरेक की एप्रोच अपनी-अपनी है, फिलॉसॉफी तो एक ही है। **मगर हियर आई फाइन्ड ए वेरी यूनिक बॉन्ड विथ ऑल सत्संगीज़। जितनी भी फेमिलीज़ इधर बैठी हुई हैं, उनका गुरुजी से एक ऐसा बॉन्ड है, जिसका कोई रियली वर्णन नहीं है।** इट्स ए डिवाईन बॉन्ड। अगर शार्ट में भी बोलूं **इट्स ए डिवाईन एन्ड लविंग बॉन्ड धेट गुरुजी हॅज़ विथ सत्संग। गुरुजी हिमसेल्फ हॅज़ रीच्ड धी पिनॅकल ऑफ स्पीरीच्युआलीटी।** पिनॅकल व्हेन आई से, इट्स लाईक वी आर रीचिंग एट माउन्ट एवरेस्ट, गुरुजी हॅज़ एचीव्ड एन्ड एटेईन्ड इट।

मैं कई बार विचार करता हूँ कि **नवीनभाई** को गुरुजी ने बहुत काम में लगाया हुआ है। जो काम गुरुजी उनको बोलें, उसका कोई डिस्कशन नहीं कि मैं ये करूँ या नहीं करूँ या मुझे ये जँचता नहीं है – वो लगा रहता है। धी मोस्ट साईलन्ट एन्ड डेडीकॅटेड वर्कर। वहाँ **सुहृद्स्वामी** को देखता हूँ – बहुत डिफिकल्ट टाईम भी आए हैं; मगर वो लगे हुए हैं। हिज़ फेईथ इन गुरुजी इज़ सो ट्रिमॅन्डस। **नॅचरली, ही हॅज़ गुरुजीज़ लव एन्ड प्रोटॅक्शन।** और संत हैं... संकल्पस्वामी, अपना अक्षरस्वरूपस्वामी है और खास करके **यज्ञप्रियस्वामी** जिन्हें मैं **'महापूजास्वामी'** कहता हूँ, ट्रिमॅन्डस... एब्सोलुयूटली! बहनों के पास देखो, **आनंदी माई** का वर्णन नहीं कर रहा हूँ; क्योंकि सब उनको जानते हैं। **शी इज़ सो डेडीकॅटेड एन्ड एपार्ट फ्रॉम बीईंग डेडीकॅटेड, शी इज़ सो लविंग।** बाकी भी जितनी तेरह बहनें हैं, इतना काम में लगाव, इतना गुरुजी से लगाव, एज़ इफ धे नेवर गेट टायर्ड; थकती ही नहीं हैं, लगी ही रहती हैं। थर्टीन सिस्टर्स इतना लगी रहती हैं; मैं कभी विचार करता हूँ कि मैं इनकी पोज़ीशन में कभी हो ही नहीं सकता। क्योंकि मैं तो पहले पूछूँ न कि मैं ये काम क्यों करूँ? वो लगी रहती हैं। नवीनभाई के लिए रियली मैं अंतर से सोचता हूँ और आई एम

सरप्राईज़्ड। एक क्वेंश्चन जरुर मन में आता है कि कॅन आई एवर डू सच ए थिंग ? कॅन आई एवर बी लाईक धॅट ? इट्स डिफिकल्ट। इफ गॉड वीशिज़, यस ऑफकोर्स। इफ धी गुरु वीशिज़, यस ऑफकोर्स। बट, अधरवाइज़ आई फाईन्ड इट वॅरी-वॅरी डिफीकल्ट कि भाई नवीनभाई जैसा – जो अभी 'नक्षत्र' की ड्यूटी में लगा हुआ है। इवन धॉ हीज़ ग्रान्डसन इज़, मगर इट इज़ ए ट्रिमेन्डस जॉब। इनफॅक्ट आई फ़ील – इट इज़ ट्रिमॅन्डस सॅक्रीफाईस, टु बी होल्ली डिवोटेड टु नक्षत्र, बिकॉज़ गुरुजी डिज़ायर्स इट। गुरुजी का डिज़ायर है, तो वो लगा हुआ है और कभी उनके फेस पर न नाराजगी, न कोई कमेन्ट्री, न कोई अपना बड़प्पन या और कुछ। आएगा साईलन्ट्ली और जाएगा साईलन्ट्ली। गुरुजी बोलेंगे – जाओ तो जाएंगे, कहें – आओ तो आ जाएंगे, कोई डिस्कशन ही नहीं। इट्स ए ट्रिमॅन्डस क्वॉलिटी। हम अपने दिल से मानें या न मानें। तो ऑल सेईड एन्ड डन, गुरुजी ने खुद तो – ही हॅज़ एटेईन्ड धी हाईएस्ट। वन्स अगेईन आई एम रिपीटिंग; बट **वॉट ही हॅज़ कल्टीवेटेड एराऊन्ड हीम, इज़ इक्वली मार्वलस – डिवाईनली वंडरफुल** एन्ड आई होप, गुरुजीज़ ब्लॅसिंग्स विल बी ऑन अस ऑल – टु एचीव धॅट स्टेटस ऑफ इक्वेनीमीटी एन्ड वी शुड बी एबल टु फॉलो हीज़ इन्स्ट्रक्शन्स, टु फॉलो हीज़ ऑर्डर्स वीधआऊट क्वॅश्चन्स इन अवर माईन्ड।

सो, थॅंक यु ऑल एन्ड वन्स अगेइन आई वुड से इट इज़ एवरीबडीज़ बर्थडे। **गुरुजी मीन्स अस पार्टीसिपेटिंग इन एवरीथिंग। वो सबको इकट्ठा कर लेते हैं,** सब शामिल हो जाएं खुशियों में; एन्ड थॅंक्स गुरुजी वन्स अगेईन। जय स्वामिनारायण, थॅंक यू।

प.पू. गुरुजी

'ब्रह्मप्रवाह' में काकाजी का एक सेन्टेन्स है – **'धुन बधुं काम करशे।' बहुत छोटा सा सेन्टेन्स है, पर हर जगह एप्लाई कर लेने जैसा है।** काकाजी एक और ढंग से भी बोलते थे – **'व्हॅन इन डाऊट प्ले धी ट्रम्प्स।'** कैसे करना, क्या करना, हाउ टु बिगीन ? – हमें समझ नहीं आए, तो पप्पाजी भी कहते थे न – 'स्टॉप धी इंजन'। भजन में लग जाओ और जब तक माईन्ड में स्थिरता न आए, तब तक भजन करो। फिर जो सूझेगा, वो प्रभु प्रेरित होगा। काकाजी ने एक छोटी किताब लिखी थी – **'लॉर्ड स्वामिनारायण एन्ड एप्लाईड ब्रह्मज्ञान'**। यूँ, काकाजी ने पत्रों द्वारा, प्रवचनों द्वारा ये सारा ज्ञान जो दिया है, वो एप्लाई कर - करके परख के दिया हुआ है; ताकि कोई भी इसका उपयोग करे, तो ही विल गॅट धी रिज़ल्ट। तो सबसे पहले तो बात ये करनी है कि यहाँ जो भी काकाजी की बात हम सुनें, उसे हम एप्लाई करें। जैसे कि धुन की बात करी कि कोई भी प्रॉब्लेम आए, तो धुन करो। हम सोचेंगे – 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' करने से क्या होना है ? भले ही हमें और ज्यादा समझ नहीं आए, पर इतना तो समझें कि **हमें मिसगाईड करके काकाजी को क्या फायदा ?** और... **अनपढ़, अंगूठा टेक, इल्लीट्रेट व्यक्ति हो और ऐसी बात करे तो हम मान भी लेते कि भई एक 'अंध श्रद्धा' है। लेकिन, ही वॉज़ ए वेरी लर्नेड मेन। फॉरेन में पढ़ा हुआ आदमी (काकाजी), वो जब ऐसी बात करे कि बड़े संत के पास अपना दिमाग़ बंद करके काम करो; तो हम सोचें कि ये बात इन्होंने अपना दिमाग़ लगा कर अनुभव से ही करी होगी न ?**

...देखो, अभी की मैं बात करता हूँ। ये पार्क का इनॅग्युरेशन करना था। हम कई बातें बोलते हैं, लेकिन और बातों में आकर कह दो या अपनी वृत्तियाँ एन्टरटेइन हो जाती हैं, इस कारण कह लो – हम वो चूक जाते हैं। पर, महाराज हमें इन बातों को कैसा समझाते हैं। भजन करा हो, तो वी विल गेट धी प्रॉपर गाईडन्स। सो, इनॅग्युरेशन करना था, तो मुझे पहले तो ऐसा था कि किसी बड़ी हस्ती को बुला कर करें। पर, इस दौरान इलेक्शन डिक्लेयर हो गया। फिर तो वो लोग आ ही नहीं सकते थे, क्योंकि इन पर कई पाबंदी लग जाती हैं। तब मैंने सोचा – चलो, हम ही कथा करते हैं न कि अपने लिए तो धाम, धामी, मुक्त ही सत्य हैं; बाकी सब छोड़ो। सो, मैंने सोचा – अपने वशी को ही बुला लो। देखो, हम पप्पाजी के टाईम से, काकाजी के टाईम से ये बातें सुनते आए हैं कि 'मानधाताओने छोड़ो'। अपने हरिभक्तों के पास ऐसा कराओ। पर, हम ऐसी कई बातें भूल भी जाते हैं। लेकिन काकाजी, पप्पाजी जबरदस्ती हमें इस लाईन पर ला देते हैं। नहीं तो, वशी को बुलाने की बात दिमाग़ में थी ही नहीं। देखो! महाराज ने कैसा करा? जो ज्ञान हम बोलते हैं, उस पर हमें जबरदस्ती भी वे चला लेते हैं और... काकाजी का तो पहले से ये तरीका है कि जिन-जिनको इन्होंने एक्सेप्ट किए हैं, जो इनके होने की कोशिश में लगे हुए हैं, जो भगवान सिद्ध करने की चाहना करते होंगे, उनकी वे यूँ परवरिश हमेशा करते ही रहे हैं। बाकी, काकाजी को समझना बहुत मुश्किल। किस समय वे क्या करें? यू कान्ट गेस। पप्पाजी के बारे तो हम सोच सकते हैं कि ऐसा होगा, तो पप्पाजी ऐसा करेंगे। काकाजी के बारे हम कुछ भी नहीं सोच सकते। दो इन्सीडन्सीस बताता हूँ –

1968 में जब 'रीयल इसेन्स ऑफ तान्त्र' की किताब काकाजी लिख रहे थे। उस समय सायन्स टॅक्नोलॉजी ऐसी एडवांस्ड नहीं थी, तो हमें टाईपिंग व राईटिंग हाथ से करनी पड़ती थी। एक बार रात को काकाजी ने मुझे और राजू को कहा कि आज रात को तुम्हें एक चॅप्टर लिखवा दूँगा। तुम लोग रात को दो-ढाई बजे आना। पता नहीं क्या हुआ, राजू भी सोया रहा और मैं भी नहीं उठा। फिर सुबह पाँच बजे जब आँख खुली, तो मैंने देखा कि काकाजी ने दो-ढाई बजे कहा था, पर अब तो पाँच बज गए हैं। फिर राजू साढ़े पांच-पौने छः बजे उठा। तो मैंने पूछा – *तू उठा था?* बोला – *'नहीं'।* फिर सुबह छः साढ़े छः बजे काकाजी उठे और फ्रेश होने गए। इस दौरान हम रूम में गए। तो, देखा कि जो हमें डिक्टेट करके लिखवाना था, वो पूरा चॅप्टर – कम से कम सात आठ पेज – उन्होंने रात को अपने हाथों से लिख कर तैयार कर दिया था। टॉयलेट से आकर बोले – *लो राजा! टाईप करा लेना और देख लेना, अगर कुछ बदलना हो तो।* आप लोग सोच सकते होंगे कि हमें कैसा लगा होगा? अरे! काकाजी ने अपने हाथों से लिख-लिख कर सात-आठ पेज हमारे लिए तैयार कर दिए। एक यह प्रसंग है।

तो दूसरी तरफ – 1981 में यहाँ एक बार काकाजी आने वाले थे और काकाजी ने ही कहा था कि मैं दो – तीन दिन दिल्ली रहूँगा, इस दौरान तू पंजाब हो आना और... मेरे जाने से पहले तू पंजाब से वापिस आ जाना। इस तरीके से सारा सॅटिंग हुआ था। तब सबद्दी वगैरह जगह जाना, नया ही शुरू हुआ था। काकाजी सुबह आए, तो हम उनके दर्शन करके निकल गए। जिस दिन आना था, उस दिन के लिए काकाजी ने कहा था कि तुम छः बजे से पहले-पहले आ जाना। मैंने कहा – हाँ। पर पता नहीं क्या हुआ कि मैं आ नहीं पाया। काकाजी तो शाम के प्लेन से चले गए। पर, इतनी कड़ी नोट लिखकर गए कि –

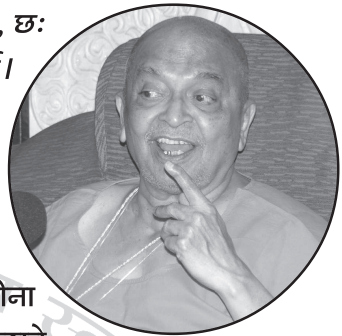

मैंने तुम्हें कहा था -स्पेश्यल मीटिंग कर लेनी है। तुम्हें किसी तरह, छः बजे तो आ जाना चाहिए था। लेकिन तुम्हें कोई और चीज बहला गई। फिर लिखाः ***भविष्य में ऐसी महाभयंकर भूल नहीं करना।*** देखो (पहले प्रसंग में) वहाँ वो कुछ बोले-करे नहीं थे, ख़ुद लिख दिया-करा। यहाँ पर भी मैं था, वहाँ भी मैं ही था। पर, यहां मुझे खड़का (डाँट) दिया। अभी भी **'ब्रह्मप्रवाह'** की मेरी कॉपी में वहाँ नोटिंग कर रखी है।

ऐसे **बड़े संतों के साथ जीना, वो भी भजन करते-करते जीना चाहिए कि हमें आपकी क्रियाओं की समझ आएगी नहीं, आप कराते रहना। तब फिर वो चीज आसान हो जाएगी। आप सब मेरे जन्मदिन मनाते हो, पर ये तो सारे बहाने होते हैं। किसी भी वजह से आप इकट्ठे होकर, आपस का प्यार कह दो–कुटुंबभाव कह दो–वो बढ़ाते रहना है** और इसके लिए भी धुन करा करनी है।

आज एक अच्छी बात करता हूँ। सुबह मैं उठा तो जैसे हरेक को ऐसे दिन पर होता है न, यूँ मुझे भी हुआ कि काकाजी आज आप मुझ से कोई ऐसा काम करा देना कि मैं जो दूसरों को 'कुटुंबभाव' का उपदेश देता हूँ, ऐसा कुछ करने का मुझे भी मौका मिल जाए। आई वॉज़ सिन्सियरली प्रेयिंग थ्रू आउट कि मुझ से कोई ऐसा काम–ऐसी सेवा आज कराना कि मुझे भी लगे कि मैंने भी अपनी फेमिली की एक सेवा करी। हम लोग पार्क में से आ रहे थे; इतने में ज्योति बहन का फोन आया। मुझे ऐसा कि बर्थ-डॅ के लिए फिर फोन किया होगा। पहले तो सोच भी रहा था कि सुबह तो फोन आया ही था, तो अभी किसलिए आया होगा? फिर भी मैंने सोचा 'तीन फरवरी पार्क' के लिए आया होगा। मैंने कहलवाया– *अभी हम उद्‌घाटन करके बस पार्क से निकल ही रहे हैं।* तो ज्योति बहन ने कहलवाया कि *'हमने एक बस बुक कराई थी, वो भी आज ही आई है; सो सुबह मैंने पूजन करके बस के ऊपर लिखा है* ***13 मार्च 2009 गुरुजी का जन्मदिन।'*** मुझे एकदम काकाजी याद आए और... मैंने कहलवाया–*'आज के दिन आपने हमारा यूं नाम लिखा-करा, तो पहला डीज़ल हमारे दिल्ली मंडल की ओर से भरवाना।'* जैसे अपना एक फेमिली में होता है न? वशी ने शायद यह सुना भी था। यूँ हमें तो खाली भजन ही करना है कि ये भक्ति मुझे करनी है; आप करा लो, आप करा लो। ऐसा भी लगता हो कि ये तो हम कैसे कर पाएंगे, हमसे नहीं होगा... पर, एक सेन्टेन्स मैंने पढ़ा था जो रिपीट भी करते रहते हैं कि–**नो प्रॉब्लेम इज़ बिगर थॅन गॉड।** हरेक को हम समझा भी देंगे कि–**कोई भी प्रॉब्लेम आए, तो भगवान का आधार लें; क्योंकि प्रॉब्लेम भगवान से बढ़कर नहीं है।** पर, अपने लिए भी ये लागू होती है। अपने लिए वो प्रॅक्टीस में लाने अपना ये सत्संग है। **मल्कानी अंकल ने बहुत अच्छी बात करी है कि यहाँ समाज बढ़ता जाता है, लेकिन हमें भीड़ इकट्ठी नहीं करनी; एक परिवार बनाना है।** भले साल में दो-तीन ही **ऐसी फेमिलीज़ इकट्ठी हों, जो मंदिर से अपनेपन और आत्मीयता से जुड़ें।** ये भण्डारी को देखो; पज़ेशन के वक्त पहली बार आए थे, तब क्या रौब था? अब कैसे जुड़ गए! **वो अपनी एसेट है** और ऐसा सत्संग बढ़ाना है। **ऐसा जो सत्संग बढ़े, वो पक्का सत्संग!** तो इसमें जो आप लोग आज तक-अब तक साथ देते रहे हो, उसके लिए खूब-खूब धन्यवाद और आगे भी वो देते रहना–इतनी प्रार्थना।

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

शेष अगले अंक में...

अनुष्ठान शिविर...

प्रभु का बल लेकर व्यावहारिक व आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए दिल्ली मंदिर से जुड़े मुंबई, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान के सभी मुक्त **मई मास** के 'अनुष्ठान शिविर' की तहेदिल से राह देख रहे होते हैं और प.पू. गुरुजी के सचोट मार्गदर्शन से अंतर की बॅटरी चार्ज कर लेते हैं। सो, 10 मई, रविवार की सायं अनुष्ठान शिविर का उद्घाटन हमारे **आत्मीय स्वजन प.भ. मल्कानी अंकल, प.भ. रवि गुप्ताजी एवं प.भ. सुशील भास्करजी के छोटे सुपुत्र पू. वरूण** ने मिल कर किया। मंदिर के आँगन में बनी बैठक में इस शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर के इस पहले दिन प.पू. गुरुजी ने **'स्वामिनारायण महामंत्र'** की महत्ता बताते हुए बात करी–

'लगातार एक महीने हमें ऐसा भजन–अनुष्ठान करना है, जैसे काकाजी बोलते थे न– ***'धुन बधु ज काम करशे'।*** *प.पू. काकाजी का यह कहना एक प्रकार से 'सावर मंत्र' ही हैं–जैसे 'मंत्रशक्ति' में लिखा है। कई प्रकार के मंत्र हैं, उसमें एक मंत्र है 'सावर मंत्र'।*

किसी महात्मा के पास जाओ... मुझे याद है कि पूर्वाश्रम में हम पू. रंगअवधूत महाराज के पास गए थे। पूर्वाश्रम के पिताजी सब संतों के पास जाया करते थे। पू. रंगअवधूत महाराज कभी भी कुछ लिख कर देते नहीं थे, पर फाधर को उन्होंने एक मंत्र लिख कर दिया। आप ये मंत्र रटा करना और आपको यहाँ आने की जरूरत नहीं है। वो सच्चे साधु थे, सो उन्होंने बताया– ***तुम्हें आगे जाकर बहुत बड़े साधु मिलेंगे, तुम्हें यहाँ आने की जरूरत ही नहीं है। पर, जब तक वो संपर्क नहीं होता है, तब तक ये 'मंत्र' जपा करो। ऐसे किसी संत ने अपने आप मंत्र दिया हो, उसे 'सावर मंत्र' कहते हैं।*** *'ॐ', 'नमो नारायण', 'राधाकृष्ण' और 'गायत्री' इत्यादि कई मंत्र हैं। लेकिन,* ***किसी संत ने विशिष्ट रूप से मंत्र लिख दिया हो, उसको कहते हैं 'सावर मंत्र'!*** *मानो हमारे किसी काम का हल करवाने के लिए कोई संत कोई स्पॅश्यल मंत्र दे दें–उसे 'सावर मंत्र' कहते हैं।* ***वैसे मैं इसको ('धुन बधुं ज काम करशे'–यह सूत्र) हमारे लिए 'सावर मंत्र' गिनता हूँ। मानो, काकाजी ने हमें यह एक मंत्र ही दे दिया है। स्वामिनारायण की धुन करा करो। पर, इसमें हमें आस्था होनी चाहिए कि 'धुन बधुं काम करशे'; ऐसी कोई चीज ही नहीं है कि धुन करो और न हो पाए।*** *मानो, हमने किसी चीज की डिमान्ड रखी हुई हो, पर जैसे कि मैं कई बार कहता हूँ–अगर वो हमारे हक़ में नहीं है, तो नहीं होती दिखाई देगी। तब हम सोचते हैं कि ये खाली कहते हैं; 'धुन' करने से कुछ होता तो नहीं है। नहीं, ऐसा नहीं है। अगर नहीं होता है तो भले, लेकिन बाद में वे हमें दिखाएंगे कि ये इसलिए नहीं किया था; जो दरअसल तेरे हक़ में नहीं था। सो, मैं कहता हूँ कि* ***हमें 'अंधा विश्वास' नहीं रखना है, अटूट विश्वास रखना है।*** *या तो महाराज काम कर देंगे या हमें दिखा देंगे कि तुम जो ये मांग रहे थे, वो तुम्हारे लिए ठीक नहीं था और... इतने से ही अटकेगा नहीं। हम जो चाहते हैं, उससे कई गुना अच्छे तरीके से वो चीज हमें सॅट करके बाद में देते ही हैं। कई प्रसंगों पर हमने यह अनुभव भी किया हुआ है...*

कोई संकल्प पूरा करना हो, तो पंडित ऐसा कहते हैं कि 'अनुष्ठान' कराओ। यूँ, ***एक महीने की इस धुन में आपकी जो मनोकामना हो, जो भी शुभ संकल्प करोगे वो महाराज पूरा करेंगे। आजमा कर तो देखो।*** *मानो, अपने स्वभाव नहीं टलते हों, कोई आदत नहीं छूटती होगी, तो वो भी महाराज छुड़वा*

देंगे... महाराज तो यदि कोई भक्त, भगवान के मार्ग पर ठीक से चलता हो, तो उसके लिए वे ब्रह्मांड का भी प्रलय कर देंगे। सो ये एक महीने का हम अनुष्ठान करेंगे... और वो भी सिर्फ 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' रटा करें – ऐसा नहीं; बल्कि प.पू. काकाजी की मूर्ति की स्मृति सहित करें।'

और... शिविर के दूसरे दिन तो 'अनुष्ठान शिविर' – 2009 एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की धुन करती मूर्ति व उन्हीं के द्वारा 1979 में दिए गए सूत्र का एक पर्दा बना कर प.पू. गुरुजी ने अपने सोफे के पीछे की दीवार पर लगवा भी दिया! यूँ, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की निरंतर स्मृति से इस एक महीने की शिविर की शुरूआत हुई और **12 जून** को **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्राकट्य दिन पर पूर्णाहुति हुई...** इस एक महीने के दौरान प.पू. गुरुजी ने सभी को कई आध्यात्मिक कुंजियाँ दीं। उनकी जुगाली करते रहने के हेतु से **'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'** के अंतर्गत अगले अंक से इन्हें प्रस्तुत करते रहेंगे।

✡✡✡

(पृष्ठ- 12 से.....)

[प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के आशीर्वाद का हिन्दी अनुवाद]

17.7.'09

प.पू. गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. दिव्य पप्पाजी के वारिसदार
ऐसे प.पू. गुरुजी का 75वाँ प्राकट्य दिन –
'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव' – 2012 के रूप में मनाने का
आप सभी मुक्तों ने निश्चित् किया है, यह जान कर खूब आनंद
और
आत्मीयतापूर्वक साक्षात् दिव्य स्वरूपों को अंतर से प्रार्थना हो गई कि
हे प्रभु! आपके अंतर का अभिप्राय, जो प.पू. काकाजी जानते थे,
उसे प.पू. गुरुजी ने रग-रग (नस-नस) में पचाया है
और
अपने संबंध में आते सभी में उतारने तनतोड़ मेहनत तथा परिश्रम कर रहे हैं।
इनके इस पुरुषार्थ में हम सभी मिलकर सुहृद्भाव के रिश्ते से साथ-सहयोग दें
और
'योगी परिवार' के सभी एकांतिक मुक्त एकत्रित होकर ब्रह्मानंद – ब्रह्मकिल्लोल करके
प.पू. काकाजी तथा प.पू. पप्पाजी के संकल्प को साकार करने
व
उनका यत्किंचित ऋण अदा करने लग पड़ें –
यही अंतर की प्रार्थना के साथ जय स्वामिनारायण!

*लि. सदा सेवक **साधु अक्षरविहारीदास** के*
खूब ही हेत से जय स्वामिनारायण!

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 1.8.'09,	शनिवार	—	पवित्रा एकादशी – व्रत *(ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने।)*
(2)	**दि. 5.8.'09,**	**बुधवार**	**—**	**श्रावणी पूर्णिमा – राखी** ***सुबह 8:00 से 10:00 प.पू. गुरुजी की निश्रा में शाश्वत् रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करेंगे।***
(3)	दि. 11.8.'09,	मंगलवार	—	नाग पंचमी
(4)	दि. 12.8.'09,	बुधवार	—	रांधण छठ (षष्ठी)
(5)	दि. 13.8.'09,	गुरुवार	—	शीतला सातम (सप्तमी)
(6)	दि. 14.8.'09,	शुक्रवार	—	जन्माष्टमी – व्रत
(7)	दि. 15.8.'09,	शनिवार	—	भारत का स्वातंत्र्य दिन
(8)	दि. 17.8.'09,	सोमवार	—	एकादशी – व्रत
(9)	दि. 23.8.'09,	रविवार	—	गणेश चतुर्थी
(10)	दि. 31.8.'09,	सोमवार	—	जलझीलनी एकादशी
(11)	दि. 1.9.'09,	मंगलवार	—	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज का प्रागट्य दिन,** वामन जयंती
(12)	दि. 3.9.'09,	गुरुवार	—	अनंत चतुर्दशी
(13)	दि. 5.9.'09,	शनिवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज – स्मृति पर्व
(14)	दि. 8.9.'09,	मंगलवार	—	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(15)	दि. 14.9.'09,	सोमवार	—	भगवान श्री स्वामिनारायण एवं ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज – स्मृति पर्व
(16)	दि. 15.9.'09,	मंगलवार	—	एकादशी, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(17)	दि. 16.9.'09,	बुधवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एवं ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज – स्मृति पर्व

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052